

2023-24



Estd. 2015

अर्जिक्या



राजकीय महाविद्यालय पनारसा, जिला मण्डी, हि.प्र.

Editorial Board

Session 2023-24



Editorial Board (Staff)

Left to right :

Prof. Anita (Hindi), Dr. Charu Ahluwalia (Editor-in-Chief), Dr. Ursem Lata (Principal)
Dr. Dimple Jamta (Commerce), Prof. Krishan Lal (Pahari)

Editorial Board (Student)



Monika
(English)



Savita
(Hindi)



Shivani
(Commerce)



Priya Thakur
(Pahari)

Dr. Amarjeet K. Sharma
Director (Higher Education)



Directorate of Higher Education
Himachal Pradesh
Shimla - 171001
Tel. : 0177-2656621 Fax : 0177-2811347
E-mail : dhe-sml-hp@gov.in

MESSAGE

It is a matter of immense delight for me to know that your college is going to publish the college magazine .

College magazine is a very useful medium for young minds to express their bristling ideas and thoughts. It gives a chance to students, the budding writers, to get the attention of others through their creative and contemporary writings. It is an essential ingredient of college regular activities and documentation of such events. The true purpose of higher education is to open the horizons for the curious young minds and to refine and polish them in such a way that they become responsible citizens of our country.

I wish your college a great future and grand success to the college magazine. I also congratulate the Editor(s) of the magazine and wish everyone all the best in their ventures.

Jai Hind.

(Dr. Amarjeet K. Sharma)

प्राचार्य की कलम से



प्रिय विद्यार्थियो,

अर्जिक्या के नए अंक को आपके समक्ष रखते हुए हमें खुशी हो रही है। यह पत्रिका आपकी प्रतिभा, रचनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धियों को प्रदर्शित करने का एक मंच है और हमारे छात्रों और शिक्षकों के संपादक मंडल द्वारा किए गए कार्य का प्रमाण है। प्रिय विद्यार्थियो, मैं आपके सम्मुख कुछ सवाल रखना चाहती हूँ, आशा है आप उनके जवाब खोजेंगे और स्वयं को जानने का प्रयत्न करेंगे।

क्या आपने कभी रचनात्मक लेखन के बारे में सोचा है?

क्या कोई ऐसे क्षण आते हैं जब आपको अपने मन की ऐसी बातें या अनुभव जो आप किसी से साझा न कर सकें हों उनको लिखने के बारे में सोचते हों?

क्या आप इस सूचना विस्फोट के दौर में लुप्त होते जा रहे लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं के बारे में सोचते हैं?

क्या आपने अपने विशेष अनुभवों, डायरी में लिखे हुए किस्सों और संस्मरणों को साझा करने का सोचा है?

आपके सामने जो सवाल रखे गए हैं, उनके उत्तर के लिए आपके समक्ष अर्जिकिया के रूप में आपकी पत्रिका प्रस्तुत है जिसमें आप न केवल कविताओं, कहानियों, डायरी लेखन के अंशों बल्कि आपके घरों में, आपके बुजुर्गों के पास मौखिक रूप से चली आ रही संपदा को भी सहेज सकते हैं। यही नहीं पत्रिका आपके द्वारा बनाए गए चित्रों, आपके मोबाइल कैमरा द्वारा लिए गए फोटोज या किसी गप्प शप या किसी भी महत्त्वपूर्ण पढ़े-लिखे या निरक्षर व्यक्ति के इंटरव्यूज़ शामिल करने के लिए भी सदा प्रस्तुत है।

कॉलेज प्रशासन आपसे उम्मीद करता है कि आप उत्कृष्ट लेख लिखें, आप अपने शब्दों में आपके आसपास हो रही गतिविधियों, मेलों, उत्सवों, यात्राओं, भेदभावों, गैरबराबरी जैसे विषयों को विमर्श के रूप में प्रदर्शित करें तो क्या ही बात होगी! इसके अलावा यदि आप विभिन्न गांवों के इतिहास, परंपरा और संस्कृति को जानने और समझने का साझा मंच भी बना सकें तो पत्रिका का होना सार्थक होगा। इस तरह जब आप अपने स्वयं के अनुभवों से लेखन की दिशा में प्रवृत्त होंगे तो धीरे-धीरे साहित्य की विभिन्न विधाओं की ओर भी प्रवृत्त हो सकेंगे। मैं उम्मीद करती हूँ कि आप इस समर्पण को सही दिशा में ले जाएंगे और आपका योगदान कॉलेज पत्रिका को अलग ऊंचाइयों पर ले जाएगा। आइए, इस कार्य को और उत्कृष्टता के पथ पर आगे बढ़ाते हैं।

मैं संपादकीय टीम और इस पत्रिका को जीवंत करने में शामिल सभी लोगों की हृदय से सराहना करना चाहूंगी। आपके समर्पण और मेहनत ने इस प्रकाशन को संभव बनाया है।

शुभकामनाएँ।

डॉ. उरसेम लता
प्राचार्या

Editorial



Dear Students,

In the vibrant, ever-evolving tapestry of our college life, creativity stands as a powerful thread that weaves together our dreams, passions, and potential. It is the spark that ignites innovation, the force that breaks boundaries, and the essence that transforms the ordinary into the extraordinary. As we embark on this academic journey, let us embrace the wings of creativity, allowing them to lift us to heights beyond our wildest imaginations.

Creativity is not confined to the arts alone; it permeates every field of study, from science to humanities, to commerce. It is the ability to think differently, to approach problems with fresh perspectives, and to craft solutions that are both effective and innovative. In every classroom discussion, every project, and every examination, there lies an opportunity to infuse your unique creative touch.

Our college provides a fertile ground for nurturing this creativity. With numerous clubs, workshops, and events dedicated to various forms of expression, you have the chance to explore and develop your creative talents. Engage with these opportunities, collaborate with peers, and let your ideas flow freely. Whether it's through writing, music, debates or dance, find your medium and let your voice be heard. Remember, creativity is not about perfection; it's about expression and exploration. Do not fear mistakes, for they are the stepping stones to innovation. Take risks, experiment, and most importantly, believe in the power of your imagination. Each one of you has a unique perspective and a story to tell. Share it with the world, for it is in these diverse voices that we find the true beauty of our community.

As you navigate your college years, let creativity be your compass. It will lead you to discover new passions, develop critical thinking skills, and build a resilient, innovative mindset. So, spread your wings, take flight, and let the sky be your only limit.

Dr.Charu Ahluwalia

Editor-in-Chief

Statement about ownership and other particulars of 'Arjikiya' Required under rule-8 of press and registration of Books Act.

**Form -(IV)
(see Rule-8)**

Place of publication : Panarsa
Periodicity of its publication : Annual
Owner's Name : Dr. Ursem Lata
Address : Principal Govt. College, Panarsa
Distt. Mandi (H.P.)
Name of Printing press. : Himtaru Prakashan Samiti, Kullu, H.P.
Nationality : Indian
Address : Near Main Post-Office, Dhalpur, Kullu.
Chief Editor's Name : Dr. Charu Ahluwalia
(Asst. Prof. English)
Nationality. : Indian
Address : Govt. College, Panarsa
Distt. Mandi, H.P.

I, Ursem Lata hereby declare that particulars given above are true and correct to best of my knowledge and belief.

Sd/-

Ursem Lata
Principal Govt.College Panarsa,
Distt Mandi, Himachal Pradesh.

The views expressed by the writers are their own and the Editorial board does not necessarily agree to them.

Editor-in-Chief

Contents :

Sr. No.	Content	Page No.
01.	Annual Report	06-10
02.	CSCA Message	10
03.	Natural Disaster in Himalayas Interviews Life Experience	14-20
04.	English Section Student Editor Life Point of View Movie Review Historical and Cultural Places	21-30
05.	Hindi Section	31-44
06.	Commerce Section	45-54
07.	Pahari Section	55-60

वार्षिक प्रतिवेदन : 2023-24

परिचय : राजकीय महाविद्यालय पनारसा हिमाचल प्रदेश के अंतर्गत जिला मण्डी में स्थित है। यह महाविद्यालय व्यास नदी के दाहिने छोर पर स्थित है। यहां प्राचार्य के अतिरिक्त वाणिज्य संकाय में 2 व कला संकाय के 6 प्राध्यापकों समेत कुल 8 प्राध्यापक हैं। इसके अतिरिक्त 1 अधीक्षक, 1 पुस्तकालय सहायक, 1 वरिष्ठ सहायक, 1 लिपिक, 1 चपरासी, 4 सेवादार और सफाई कर्मचारी सेवारत हैं और कनिष्ठ सहायक का 1 पद रिक्त है।

1. **नामांकन** – महाविद्यालय में विभिन्न संकायों के अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या क्रमवद्ध रूप से निम्नलिखित प्रकार से वर्णित है

Enrollment of students BA/B.com for the session 2023-24 on dated 12/12/2023 in resp

Class	SC			ST			OBC			IRDP			
	Boys	Girls	Total	Boys	Girls	Total	Boys	Girls	Total	Boys	Girls	Total	
BA	BA 1st Year	13	21	34	2	2	4	0	0	0	1	2	3
	BA 2nd Year	17	15	32	0	0	0	1	1	2	0	0	0
	BA 3rd Year	9	7	16	0	2	2	0	1	1	0	0	0
	Total	39	43	82	2	4	6	1	2	3	1	2	3
B.Com	B Com 1st Ye	0	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	0
	BCom 2nd Ye	0	2	2	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	BCom 3rd Ye	1	1	2	0	1	1	0	0	0	0	0	0
	Total	1	3	4	0	1	1	1	0	1	0	0	0
Graduation Classes	Total UG	40	46	86	2	5	7	2	2	4	1	2	3

2. **वार्षिक परीक्षा परिणाम** :- परीक्षा परिणाम की प्रतिशतता किसी भी संस्थान की विशिष्टता की द्योतक होती है। जिसके लिए महाविद्यालय के खोजी प्रबुद्ध शिक्षकों का योगदान महत्वपूर्ण है। यह हमारे लिए बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि हमारे महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम संतोषजनक एवं उत्साहपूर्वक रहा है। विद्यार्थी जहां अपने परिश्रम, विवेक और अध्ययन में अपनी पूरी एकाग्रता का परिचय देते हैं।

संकायवार तालिका

क्रमांक	संकाय	कुल छात्र	उतीर्ण छात्र	महाविद्यालय प्रतिशतता
1.	बीए- I	112	99	88 प्रतिशत
	बीए- II	73	68	93 प्रतिशत
	बीए- III	51	51	100 प्रतिशत
2.	वाणिज्य			
	बीकॉम- I	06	06	100 प्रतिशत
	बीकॉम- II	17	15	94 प्रतिशत
	बीकॉम- III	12	12	100 प्रतिशत

स्थानान्तरण, रिक्तियां एवं पदोन्नति :

स्थानान्तरण कर्मचारियों की सहज प्रक्रिया मानी जाती है। इसके साथ सेवानिवृत्ति कर्मचारी के जीवन का कठोर यथार्थ है। इस

महाविद्यालय में सत्र 2023-24 में स्थानांतरण हुए और यहां आए हुए प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों का ब्यौरा निम्न है :-

निर्गमन : प्रो. राजकुमार रॉय, प्रो. अंजू कुमारी, डॉ. शेफाली, प्रो. सीमा शर्मा, श्रीमती रूमा देवी, प्रो. खेम चंद ।

आगमन : प्राचार्या डॉ. उरसेम लता, प्रो. कृष्ण लाल, प्रो. चारु आहलुवालिया, प्रो. सीमा शर्मा, प्रो. रत्न नेगी, श्रीमती कीर्ता, श्रीमती बिंदू, श्रीमती नैना देवी ।

सेवानिवृत्ति : कार्यालय अधीक्षक श्री प्रेम लाल जी महाविद्यालय पनारसा से सेवानिवृत्त हुए ।

प्राध्यापकों की उपलब्धियां :

सहायक आचार्य कृष्ण लाल :

- 22 - 5 जून 2023, के मध्य टी-एल-सी रामानुजन महाविद्यालय द्वारा आयोजित द्वि-साप्ताहिक अंतर्राष्ट्रीय पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में भाग लिया ।
- 22-24 जून 2023, तक हिंदी विभाग द्वारा, जवाहरलाल नेहरू राजकीय महाविद्यालय हरिपुर एवं भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद चंडीगढ़ द्वारा वित्त पोषित राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोध पत्र प्रस्तुत किया ।
- 22-28 नवंबर 2023, तक राजकीय महाविद्यालय धामी द्वारा आयोजित ब्राह्मी लिपि से संबंधित द्वि-साप्ताहिक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया ।

डॉ. डिंपल जाम्टा :

- 22 मई से 5 जून 2023, के मध्य टी-एल-सी रामानुजन महाविद्यालय द्वारा आयोजित द्वि साप्ताहिक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में भाग लिया ।
- 24 से 30 नवंबर 2023, में राजकीय महाविद्यालय आनी, हरिपुर और कुल्लू के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संकाय विकास कार्यक्रम में भाग लिया ।
- परमहंस योगानंद अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोध पत्र प्रस्तुत किया गया जिसका आयोजन 23 से 24 फरवरी 2024 को किया गया था ।

डॉ. चारु आहलुवालिया :

- 30 अक्टूबर 2023 को शोध प्रबंध निवेदित किया ।
- सितंबर 2023 में यूजीसी केयर के लिटरेरी वॉइस नामक जर्नल में शोध पत्र प्रकाशित किया ।
- गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलेज द्वारा आयोजित एक साप्ताहिक ऑनलाइन राष्ट्रीय स्तरीय एफडीपी में 15 अप्रैल से 21 अप्रैल 2024 तक भाग लिया ।
- आई. ए. आर.जे. नामक पत्रिका में मई 2023 में शोध पत्र प्रकाशित किया ।
- दाथ वोयेज नामक पत्रिका में मार्च 2023 में शोध पत्र प्रकाशित किया ।
- जून 2023 में Scopus सूची किताब-अध्याय प्रकाशित हुआ ।

डॉ. निशा शर्मा :

- टीएलसी रामानुजन महाविद्यालय द्वारा आयोजित बहु विषय द्वितीय साप्ताहिक पुण्याचार्य पाठ्यक्रम में 11-25 नवंबर 2023 भाग लिया ।
- राजकीय महाविद्यालय आनी, हरिपुर और कुल्लू के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय एफडीपी म 24 से 30 नवंबर 2023 में भाग लिया ।
- संगीत क्षेत्र में रोजगार विषय पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी 23-24 फरवरी 2024 में भाग लिया और शोध पत्र प्रकाशित किया ।

अभिभावक-शिक्षक संघ : अध्यापकों-छात्रों-अभिभावकों के बीच संवाद कायम करने के उद्देश्य से महाविद्यालय में पीटीए का गठन भी प्रतिवर्ष किया जाता है । संघ न केवल महाविद्यालय प्रशासन के साथ विभिन्न विकासत्मक गतिविधियों में सहयोग करता है, बल्कि साथ ही साथ अपने बहुमत सुझावों द्वारा एक सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण भी करता है । सत्र 2023-24 के लिए गठित संघ का विवरण इस प्रकार है:-

प्रधान : श्री राजेश कुमार

उप-प्रधान : श्रीमती अनीता

सचिव : प्रो. हीरा सिंह

सह-सचिव : श्री रूम सिंह

कोषाध्यक्ष : श्री हरी शर्मा

सदस्य : सभी अध्यापकगण

पीटीए में एकत्रित कुल धनराशि - 446709 रुपए हुई । इसमें से 2023-24 में 134691 रुपए की धनराशि विभिन्न विकासात्मक/सांस्कृतिक गतिविधियों व छात्रों के हितों से जुड़े अन्य कार्यों हेतु व्यय की गई ।

– **केंद्रीय छात्र संगठन (एससीए)** : महाविद्यालय के कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए तथा विद्यार्थियों की विभिन्न समस्याओं को प्राचार्य तक पहुंचाने के लिए महाविद्यालय में प्रत्येक वर्ष केंद्रीय छात्र परिषद का गठन किया जाता है। इसमें अध्यक्ष पद के लिए शिवानी (अंतिम वर्ष), उपाध्यक्ष अर्चना भारती (अंतिम वर्ष), सचिव मधु (द्वितीय वर्ष) और सह-सचिव ललिता (प्रथम वर्ष) निर्वाचित हुईं।

छात्रवृत्तियां : वित्त वर्ष 2023-24 के अंतर्गत अलग-अलग योजनाओं के तहत विभिन्न वर्गों के विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां प्रदान की गईं।

1. अनु. जाति के छात्रों के लिए केंद्र प्रायोजित पोस्ट मेट्रिक छात्रवृत्ति योजना के तहत 05 विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की गई।
2. हिमाचल प्रदेश सरकार के अंतर्गत कल्पना चावला छात्रवृत्ति 02 छात्रों को प्रदान की गई।
3. महाविद्यालय और विश्वविद्यालय छात्रवृत्ति की केंद्रीय क्षेत्रीय योजना के अंतर्गत-1 विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की गई।

वार्षिक पत्रिका : महाविद्यालय के वार्षिक पत्रिका 'अर्जिक्या' विद्यार्थियों की लेखन प्रतिभा को उजागर करने का सौभाग्य प्रदान करती है। इसमें विद्यार्थियों की विभिन्न विषयों पर अपने विचार अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है। पत्रिका मुख्य-सम्पादक डॉ. शेफली के संरक्षण में तैयार हुई है। इस सत्र के विभिन्न विषयों के प्राध्यापक एवं छात्र/छात्रा सम्पादकों का विवरण इस प्रकार है—

क्र.सं.	विभाग	प्राध्यापक संपादक	छात्र संपादक
1.	अंग्रेजी	डॉ. चारु आहलुवालिया	मोनिका (बीए तृतीय वर्ष)
2.	हिंदी	सहायक आचार्या अनीता	सबिता (बीए तृतीय वर्ष)
3.	वाणिज्य	डॉ. डिम्पल	शिवानी (बी.कॉम तृतीय वर्ष)
4.	पहाड़ी	सहायक आचार्य कृष्ण लाल	प्रिया ठाकुर (बीए द्वितीय वर्ष)

विद्यार्थियों की उपलब्धियां : दिसंबर, 2023 को महाविद्यालय की छात्राओं को उनकी शैक्षणिक गतिविधियां तथा मैरिट के आधार पर उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए वल्लभ महाविद्यालय, मण्डी द्वारा टैब प्रदान किए गए। इन छात्राओं के नाम हैं— शशि किरण और डिम्पल कुमारी (बी.ए. तृतीय वर्ष), भुवनेश्वरी (बी. कॉम. तृतीय वर्ष)।

महाविद्यालय की गतिविधियां : महाविद्यालय में विभिन्न प्रकोष्ठ बनाए गए हैं, जिनमें निम्नलिखित गतिविधियां आयोजित की गईं :-

स्वरांजलि : राजकीय महाविद्यालय पनारसा में 21 नवम्बर 2023 को संगीत विभाग द्वारा स्वरांजलि कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम में महाविद्यालय की प्राचार्या (अतिरिक्त कार्यभार) डॉ. चारु आहलुवालिया ने बतौर मुख्य-अतिथि शिरकत की। यह रंगारंग कार्यक्रम संगीत विभाग की प्राध्यापिका डॉ. निशा के मार्गदर्शन में हुआ। कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताओं; लोकगीत, लोक-नृत्य, शास्त्रीय संगीत, पंजाबी नृत्य, भजन, समूह गान इत्यादि का आयोजन किया गया।

साहित्य परिषद : साहित्यिक परिषद समारोह राजकीय महाविद्यालय पनारसा में 27 सितंबर को डॉ. चारु आहलुवालिया तथा प्रोफेसर अनीता की अध्यक्षता में साहित्यिक परिषद समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताएं करवाई गईं। अंग्रेजी और हिंदी माध्यम में कविता पाठ, चित्रकला, रंगोली प्रतियोगिता करवाई गईं। विद्यार्थियों द्वारा इसमें बढ़-चढ़कर भाग लिया गया। संगीत, इतिहास, राजनीतिक शास्त्र, वाणिज्य विभाग के विद्यार्थियों द्वारा भी योगदान दिया गया। अंग्रेजी कविता पाठ में मोनिका द्वारा प्रथम स्थान प्राप्त किया गया और हिंदी कविता पाठ में रवि शर्मा द्वारा प्रथम स्थान प्राप्त किया गया।

ज़िरो वेस्ट सप्ताह

• फरवरी, 2024, राजकीय महाविद्यालय पनारसा में छह दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय जीरो वेस्ट-डे पर आधारित कार्यशाला का आयोजन डा. डिम्पल जाम्टा की अध्यक्षता में किया गया। कार्यशाला में 50 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस दौरान विद्यार्थियों ने पुरानी एवं बेस्ट सामग्रियों को इकट्ठा किया और उन्हें शानदार गमलों के रूप में परिवर्तित किया। कार्यशाला का समापन महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. उरसेमलता द्वारा गमलों में पौधे लगाकर किया गया।

रेड रिबन क्लब

• 1 दिसम्बर, 2023 रेड रिबन क्लब राजकीय महाविद्यालय पनारसा द्वारा विश्व एड्स दिवस 1 दिसम्बर 2023 डा. निशा शर्मा की अध्यक्षता में मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि महाविद्यालय के कार्यकारी प्राचार्य डॉ. चारु, आहलुवालिया वालिया रहे। इस अवसर पर महाविद्यालय के छात्र - छात्राओं ने रेड क्रॉस रिबन बनाकर एड्स जागरूकता का सन्देश दिया। इसके साथ ही महाविद्यालय में पोस्टर मेकिंग और नारा लेखन प्रतियोगिता भी की गई। स्वास्थ्य शिविर का भी महाविद्यालय में आयोजन किया गया जिसमें 150 बच्चों ने भाग लिया और अपने स्वास्थ्य की जांच करवाई शूगर, वी०पी० और ऐनीमिया प्रमुख हैं।

खेल-कूद गतिविधि :

- 22 नवम्बर 2023 को महाविद्यालय पनारसा की जुडो (महिला वर्ग) टीम ने अंतरमहाविद्यालय जुडो प्रतियोगिता में भाग लिया। आयोजन राजकीय महाविद्यालय सोलन में किया गया था। राजकीय महाविद्यालय पनारसा की ओर से रुहानी और कविता ने भाग लिया। कविता ने अंतर महाविद्यालय जुडो प्रतियोगिता में कांस्य पदम हासिल किया।

नशा मुक्त कार्यक्रम :

- राजकीय महाविद्यालय पनारसा में 02/11/2023 को प्रजापिता ब्रहमकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय और, मेडिकल विंग, राजयोग एजुकेशन रिसर्च फाउंडेशन एवं महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

शैक्षणिक भ्रमण :

- पराशर झील परिसर में वृक्षारोपण : 08/1/2023 को राजकीय महाविद्यालय पनारसा के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवियों एवं इतिहास विभाग के छात्र-छात्राओं द्वारा पराशर झील परिसर में वृक्षारोपण किया गया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के 50 विद्यार्थियों द्वारा भाग लिया गया।

एसएसएस :

- युवा संवाद कार्यक्रम 23 मार्च 2024 को राजकीय महाविद्यालय पनारसा में NSS इकाई द्वारा युवा संवाद कार्यक्रम का आयोजन प्रो कृष्ण लाल जी की अध्यक्षता में किया गया जिसमें उच्च शिक्षा निदेशक डा0 नंद लाल शर्मा जी बतौर मुख्य अतिथि थे मौजूद रहे इनके अतिरिक्त बतौर मुख्य वक्ता सेवानिवृत्त सहआचार्या डा0 चेतन राणा राजकीय महाविद्यालय कुल्लू से आचार्य राजेश कुमार सिंह जी मौजूद रहे कार्यक्रम के दौरान मुख्यवक्ताओं सहित 9 छात्र वक्ताओं ने अपने विचार रखे कार्यक्रम में कुल 150 विद्यार्थियों ने भाग लिया
- अंतर महाविद्यालय खो-खो (W) प्रतियोगिता का आयोजन राजकीय महाविद्यालय लंबाथाच (सराज) द्वारा किया गया, जिसमें महाविद्यालय की खो खो टीम में बारह छात्राओं ने श्रेष्ठ प्रदर्शन किया और सेमीफाइनल तक पहुंच गई।
- 30/12/2023 को राजकीय महाविद्यालय पनारसा की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा एक दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय के 62 स्वयंसेवियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान सर्वप्रथम महाविद्यालय परिवार की साफ सफाई की तत्पश्चात महाविद्यालय परिसर के बाग की क्यारियों की मरम्मत की गई।
- सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन 27/02/2024 को महाविद्यालय में सात दिवसीय शिविर का आयोजन प्रो कृष्ण लाल की अध्यक्षता में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा किया गया। शिविर का शुभारम्भ महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ उरसेम लता द्वारा झण्डा फहराकर किया गया। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का आयोजन किया गया।
- दिनांक 11 अक्टूबर 2023 को राजकीय महाविद्यालय पनारसा की तीन NSS स्वयंसेवी अर्चना भारती, चांदनी ठाकुर और अदिती ठाकुर ने राजकीय महाविद्यालय विलासपुर में युवा कार्यक्रम और खेल मन्त्रालय भारत सरकार, राष्ट्रीय सेवा योजना क्षेत्रीय निदेशालय चंडीगढ़ एवं राष्ट्रीय सेवा योजना, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय पूर्व गणतन्त्र परेड चयन शिविर में भाग लिया जिसमें नॉर्थ महाविद्यालय की NSS स्वयंसेवी चांदनी ठाकुर का चयन जोन प्रो-रिपब्लिक डे परेड कैम्प 2023 के लिए हुआ। इस कैम्प का आयोजन 25 अक्टूबर 2023 से 3 नवम्बर 2023 तक हरियाणा राज्य के फतेहाबाद शहर के प्रमुख उच्च शिक्षण संस्थान मनोहर मैमोरियल पी० जी० कॉलेज में होगा।

रोवर रेंजर तथा एनएसएस

- 13 अक्टूबर, 2023 महाविद्यालय की NSS इकाई, रोवर एवं रेंजर व इको क्लब इकाई द्वारा महाविद्यालय परिसर में मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम के अन्तर्गत अमृत कलश यात्रा का शुभारम्भ महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. चारू आहलुवालिया (अतिरिक्त कार्यभार) द्वारा कलश में मिट्टी व चावल किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के शिक्षक एवं गैर शिक्षक वर्ग सहित सभी विषय के विद्यार्थी भी उपस्थित थे।
- दिनांक 13 अक्टूबर 2023 को राजकीय महाविद्यालय पनारसा में राष्ट्रीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण दिवस और समर्थ 2023 कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन जिला मण्डी आपदा प्रबन्धन द्वारा महाविद्यालय के नव निर्मित भवन में किया गया जिसमें महाविद्यालय के NSS रोवर रेंजर एवं इको-कल्प के स्वयंसेवियों एवं अन्य विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान भूकम्प, अग्निकाण्ड, बाढ़, मृदा अपरदन जैसी आपदाओं से बचने के उपाय बताए गये। आपदाओं से बचने के लिए मॉक ड्रिल का अभ्यास भी कराया गया।
- क्लीन इंडिया फिट इंडिया कार्यक्रम के तहत महाविद्यालय में दे और रोवर एवं रेंजर इकाई के समन्वय से स्थानीय महाविद्यालय तथा बाजार क्षेत्र में स्वच्छता हेतु जागरूकता रैली का आयोजन किया गया इस कार्यक्रम के तहत महाविद्यालय में नारा लेखन पोस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

सड़क सुरक्षा : राष्ट्रीय महाविद्यालय पनारसा में 14 व 15 मार्च को रोड सेफ्टी क्लब द्वारा दो दिवसीय कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन प्रोफेसर हीरा सिंह की अध्यक्षता में किया गया इसमें छात्राओं को सड़क सुरक्षा से संबंधित विभिन्न नियमों से अवगत करवाया गया तथा कार्यक्रम के तहत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें पोस्टर मेकिंग प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता नारा लेखन का आयोजन किया गया सभी विजेता प्रतिभागियों को प्राचार्या डॉ उरसेम लता जी द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस :

राजकीय महाविद्यालय पनाश में 15 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त प्राचार्या डॉक्टर धनेश्वरी शर्मा जी वह अधिवक्ता चंद्रा जी थी । इसमें लगभग 120 विद्यार्थी उपस्थित थे। डॉ धनेश्वरी शर्मा जी ने विद्यार्थियों को महिला दिवस की महत्वता के बारे में बताया तथा अधिवक्ता चंद्र जी ने विद्यार्थियों को योन उत्पीड़न से संबंधित नियमों के बारे में अवगत कराया ।इस कार्यक्रम में कविता पाठ का भी आयोजन किया गया और विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए पुस्तक भी पुरस्कार स्वरूप प्रदान की गई।

पुस्तकालय :- जिज्ञासा मनुष्य का सहजात भाव है, जिसकी पूर्ति पुस्तक अध्ययन के द्वारा संभव है। महाविद्यालय के पुस्तकालय में वर्तमान समय में विभिन्न विषयों की 1480 पुस्तकें, 3 पत्र-पत्रिकाएं एवं 3 दैनिक समाचार पत्रों का विद्यार्थी लाभ उठा रहे हैं।

CSCA Message



Education is the essential tool for a bright future for all of us. We can achieve anything good in life by using this tool of education. Higher levels of education help people gain social and family respect and a distinct identity. I was a simple girl. The biggest change in my life happened when I came to Govt. Degree College Panarsa. My confidence was clearly visible on my face. All the teachers got to know me and I started participating in various competitions. Last year, I was made President of CSCA. There were a lot of responsibilities on me. We need strict laws and officers for college who can help in improve the education system.

**Shivani Thakur, B.A 3rd Year.
President**

यदि विद्यालय विद्यार्थी जीवन का आधार है तो महाविद्यालय विद्यार्थी के जीवन का सुनहरा भविष्य है।

हमारा महाविद्यालय भले ही 2015 में बना है, फिर भी कुछ ही वर्षों में इसने काफी उन्नति की है। इस समय महाविद्यालय में आर्ट्स और कॉमर्स के ही विषय है। अतः मैं चाहूंगी कि आने वाले भविष्य में यहां आर्ट्स और कॉमर्स के साथ-साथ साइंस तथा अन्य विषय भी हों। साथ ही एनसीसी भी हो। अन्य महाविद्यालयों की तुलना में पनारसा महाविद्यालय का शिक्षा स्तर काफी अच्छा रहा है। फिर भी मैं चाहूंगी कि शिक्षण अधिगम की इस प्रक्रिया को और अधिक बेहतर बनाकर महाविद्यालय के शिक्षा स्तर को और अधिक ऊंचा किया जाए तथा हमारा महाविद्यालय एक आदर्श महाविद्यालय के रूप में प्रस्तुत हो।

**मधु, बीए द्वितीय सत्र।
सचिव**

Education is the basis of a person's life. Without education a person cannot achieve his socio-economic and physical development. The construction of college Panarsa was announced in 2015. The construction of the college building is underway. Due to the presence of college and school premises together, the school students and the college students study in a common campus, the education level of the college has been almost good in the last 8-9 years. But I hope that our new session 2024-25 starts with new enthusiasm in our new college building with the cooperation of all the students and all the teachers. I hope that our education standards can achieve new rights in future.

**Lalita Thakur, B.A. 1st Year.
Joint-Secy.**





Fun and Learn

NSS Activities



Natural Disaster 2023



Pic. Credit : Ashutosh, BA 1st year

हिमाचल में प्राकृतिक आपदा 2023

Interview On Floods of 1991

I interviewed my mother which is as follows :

1. First introduce yourself ?

Mother - My name is Geeta Devi. I was born on 17-09-1983 in a village called Dhara. I am 40 years old. I did my schooling from Govt. High school Jibhi.

2. Did you see any flood before the floods of July-August 2023?

Mother : Yes I have seen such terrible floods in 1995.

3. How old were you at that time?

Mother : I was 12 years old at that time.

4. Did you see this flood yourself or heard about it from someone?

Mother : I saw this flood myself.

5. What happened at that time?

Mother : There was a ravine near our village. Due to heavy rains the

water level of the ravine had increased. Due to rising water level, water had entered people's homes. Terraced fields had entered people's homes. Terraced fields had collapsed due to heavy rains.

At that time, the house of a person named Chuni Lal from our village was washed away in water and he died. The crop was destroyed due to heavy rain. Due to the strong flow of water from the ravine, the Jibhi bridge broke completely and our village was cut off from the market. There was a lot of damage caused by the water around the ravine.

People's life savings were lost in the water. The road in our village was so badly damaged that it was beyond repair and everyone

in the village had to suffer huge losses.

6. Was the flood of 1995 worse than the flood of 2023?

Mother : No, the flood of 1995 was not worse than the flood of 2023.

7. What difficulties did you or other people faced in the flood of 1995?

Mother : Due to the flood in 1995, the goods had to be carried on the back, people who were injured had to be carried to the hospital on chairs and on shoulders. People who were homeless due to the flood had to migrate to other places.

8. Thank you for this valuable information.

Mother: Your are welcome. Though this interview I got to revise the past memories.

Geeta Devi, B.A. 1st Year.

1995 Flood In Himachal Pradesh: An Interview with my mother

I : Mother please share your experience of 1995 flood in Himachal Pradesh.

Mother : The 1995 flood in Himachal Pradesh was a harrowing experience for our family. My primary concern was ensuring the safety of our children amidst the rising waters. Our family faced challenges in accessing essential supplies and maintaining sense of normalcy for the kids during such a crisis. The community spirit that emerged during that time, however, was remarkable, as neighbors came together to support each other. It was a testing period, but it taught us the importance of resilience and community solidarity.

I : How did you manage to keep your family safe during the flood, and what were the most significant challenges you faced?

Mother : Ensuring our family's safety during the flood involved

quick decision making. We had to find higher ground, and at times, even evacuate to temporary shelters. The lack of access to clean water and essential supplies posed a significant challenge. Keeping children calm and explaining the situation in a way they could understand was crucial. The uncertainty of the situation was emotionally taxing, but the support from neighbors and the community played a vital role in overcoming these challenges.

I : Were there any specific moments or incidents that stood out to you during the flood, reflecting the impact on your family?

Mother : One memorable incident was when our community came together to help each other. Neighbors shared resources, and we collectively ensured everyone had enough to sustain themselves. It was heartening to see the

strength in unity during such difficult time. Additionally, witnessing the resilience of children as they adapted to the challenging circumstances left a lasting impression on me as a mother.

I : How did the aftermath of the 1995 flood affect our family, and what steps did you take to rebuild and recover?

Mother : The aftermath of the flood brought about significant challenges in terms of rebuilding our lives. We faced property damage and had to start a new. Rebuilding emotionally was just as crucial as the physical reconstruction. We sought support from local organizations and government aid to help us recover. The experience taught us the importance of preparedness and community bonds, leading to a stronger sense of resilience within our family.

Vipin Thakur, B.A. 1st Year.

An Interview on 1995 Floods

I : Introduce yourself.

Father : My name is Ivan Chand. I was born on 14 June, 1977 in Sarsehad (Nagwain). I am 46 year old. I completed schooling from Government Senior Secondary School Nagwain and completed my B.A from government Degree College Kullu.

I : Have you seen any severe flood before the flood of July-August 2023?

Father : Yes, I have seen one. A similar terrible flood occurred in 1995.

I : How old were you at that time?

Father : I was 18 year old at that time?

I : At that time I was doing B.A 1st Year from Government Degree College Kullu.

I : Have you seen this flood with your own eyes or heard about it from someone?

Father : No, I have seen this flood with my own eyes.

I : Where did you see this flood?

Father : I saw this flood at a place called Pirdi, when I was coming home from college in the bus with my classmates. Due to increase in the water level of the river, water had reached the road. We all were terrified to see this terrible sight. Bus tyres were submerged in water up to one feet. Beyond Pirdi, towards Mohal, the river had crossed over an area of about 35 meters by breaking its banks. When we reached Bhunter, the floor there had become very

terrible. The Parvati river, which joins the Vyas river, had shown its fierce from. At that time cloud burst was a new phenomenon.

I : What does cloud burst mean?

Father : Continuous rainfall in large quantities or excessive rainfall in some limited area is called cloud burst. Due to this the flow of water in small drains, ravines etc increases excessively.

I : Tell your experience about the flood in Bhunter.

Father : I saw with my own eyes the horrific scene of flood in Bhunter due to cloud burst. The bridge built at the meeting point of Manikaran Valley and Bhunter was lost. The bridge was damaged. Broken wooden items from houses were floating in the river.

I : What did you feel after seeing the terrible flood at that time?

Father : Seeing the terrible from of nature. I felt that nothing is impossible in for of nature. Everyone was praying to God to stop the rain and protect everyone's life and property.

I : Was the flood of 1995 was worse than the flood of 2023?

Father : No, the flood of 1995 was not more harmful than the flood of 2023. Population was less at that time. People houses were far away from rivers. But now due to increase in population, people are building houses around rivers and so that damage is much more.

Lalita Thakur, B.A. 1st Year.

साक्षात्कार

आखिर 18 जुलाई 2023 को यह तबाही का मंजर थम गया लगभग 10 दिनों के इस कठिन समय से हम बाहर निकल गए।

धूप तो निकली पर सब बदल गया था कुछ इमारतें कुछ पुल, कुछ घर, कुछ लोग जो हमारी दिनचर्या का हिस्सा थे उन्होंने 10 दिनों की कीमत चुकाई है और वो अब नहीं थे।

चलो सफर तो फिर भी चलेगा और चलता रहेगा, तो इस सफर में हम मिले कुछ ऐसे पीड़ित लोगों से जिन्होंने अपने परिवार के सदस्य इस आपदा में खोए और कुछ ऐसे बुजुर्ग से जिन्होंने 1947, 1945 में आई बाढ़ के मंजर भी देखे थे। इस कड़ी में उन्हीं बुजुर्ग दम्पति से बात करते हैं जिनका घर इस आपदा में ढह गया।

श्री युगले राम जी (भूतपूर्व सैनिक)

श्रीमति रेप्ती देवी जी (पत्नि डी आर जी)

साक्षात्कर्ता के द्वारा प्रश्न :

1. क्या आने सन् 1947, 1995 की आपदा देखी थी अगर हां तो उसमें और इसमें क्या फर्क था?

उत्तर :- श्री दुगले राम जी द्वारा— नहीं। मैं 1947 की बाढ़ का समय मुझे तो याद नहीं मैं छोटा था उस समय पर हां हमने अपने बाप, दादाओं से सुना है कि देश के आजाद होने से पहले चिनाब, झेलम नदी का जलस्तर बढ़ने से बाढ़ के हालात आए थे।

साक्षात्कर्ता :- तो आप 1995 की बाढ़ के बारे में कुछ बताएं?

श्री डी आर ठाकुर जी— देखो बेटा जब 1995 का समय आया तो बाढ़ का समय तो मैंने बहुत करीब से अनुभव किया है मैं सैनिक था तो मैं छुट्टीयों में घर आया हुआ था। तो जब आया तो लगभग एक हफ्ते बाद खबर मिली कि रावी नदी का जलस्तर बढ़ गया तो आशंका है कि ब्यास में बहाव बढ़ सकता है। तो इसी को मद्देनजर रखते हुए हम सचेत थे। पर उसके 3 दिन बाद रात के करीब 1:30 बजे ब्यास नदी का जलस्तर बढ़ गया और खतरे के निशान से उपर चला गया। मेरे पिताजी ने सभी को जगाया और हम नए घर जोकि थोड़ा ऊपर था चले गए। एवं हम सभी उपर गए मेरे दादा—दादी के आने से पहले ही पानी घर में आ गया और वह बह गए। पर अगर मैं 1995 की तुलना, 2023 ये करूं तो यह समय ज़्यादा भयंकर था मौत भी और नुकसान भी 2023 में ज्यादा हुआ।

साक्षात्कर्ता —धन्यवाद अंकल जी।

साक्षात्कार

श्रीमति रेप्ती देवी जी :- मैं एक गृहणी हूँ बेटा तो मेरा फर्ज है कि मैं घर की देखरेख करूं पर 1995 में हालात संभलने लायक थे। हालात खराब नहीं हुई थी पर यह 2023 में तो हालात खराब हो गई कई परिवार चले गए कई वेधर, वेसहारा हो गए, यह परिस्थितियां असहनीय थी भगवान ऐसा समय फिर न दिखाए।

साक्षात्कर्ता— धन्यवाद माता जी आशा है आप स्वस्थ रहे।

रवि शर्मा

I Was a Witness to a Rescue Operation

In a late night rescue operation, the NDRF team rescued six people who were stranded in the Beas River near Nagwain village in Mandi district due to the rise in the water level of the river due to increased rainfall in the state in July-August 2023.

Six people were rescued by the National Disaster Response force (NDRF) after they were trapped in the overflowing Beas River due to heavy rainfall in Himachal Pradesh.

This incident happened in Nagwain village of Mandi district in July.

I saw the rescue operation underway with the officials saving the trapped with the help of a rope. A massive and sturdy rope was tied to both ends of the

river and the people trapped were made to cross the river with the help of that. The water in the river was raging and overflowing as a results of the rains. The officials with much care, ensured that the trapped people were brought from one end of the river to the other. A huge crowd had gathered at the spot.

Himachal Pradesh witnessed heavy rainfall which led to flash floods throughout the state. The flood wreaked havoc in the state. Only time will be able to heal the wounds of the people. Loved ones were lost in the floods making us think again that nature is supreme and man should not interfere in the working of the nature.

Yogita Rawat, BA 3rd year

“Floods in Himachal Pradesh: A Reminder to Mend Ways”

The 2023 Monsoon rains caused severe flash floods in Himachal Pradesh, resulting in the loss of lives and property. The precipitation was attributed to the combined effect of the South-West Monsoon and Western Disturbances. The floods caused widespread damage to infrastructure of people. The Government and the Red Cross provided relief to those affected but the situation remained dire and continuous support was needed.

The floods were triggered by heavy rainfall in the region, which began in mid- July and -mid August of 2023. The rains caused rivers to overflow and landslides occurred, which blocked roads and damaged buildings. The floods also caused widespread damage to crops and livestock, and left many people without food or shelter.

The floods in Himachal Pradesh are a reminder of the devastating impact that climate change can have on communities. As the climate changes, we can expect to see more extreme weather events, such as floods, droughts, and heat waves. It is important to take steps to mitigate the effects of climate change and to build resilience to extreme weather events.

Mukesh Thakur, B.A 1st Year.

I Couldn't Believe What I Saw!

It is common to rain during the rainy season. But the rain that poured last year in Himachal created havoc in the entire state. I saw the devastation of that time with my own eyes.

At that time I had gone to my uncle's house. Two days after that, it rained heavily and continuously for three days. This happened recently last year.

Due to continuous heavy rain electricity failed and phone network was shut. It kept raining the whole night. In the morning when we went out to see the weather outside, we all got scared. There were dark clouds in the sky. The water level of Beas river had increased a lot and the sound of flowing river was very terrible. It seemed as if the river water would swallow everything.

Due to this flow of water, huge trees were uprooted, many houses near the river were washed away and streets were flooded. Similarly, it rained continuously for two days. When the rain stopped on the third day, everyone went to the terrace of their houses. When we looked outside, there was silence all around. The sound of the raging river had diminished. The roads were closed, many people became homeless and the bridges were broken.

A person in our neighborhood fell ill and due to road closure, he could not be taken to the hospital on time and he died. The rain had created havoc outside. Lakhs of people were displaced from their homes. For the first time in 18 years of my life, I have seen such a terrible scene.

Simran, B.A. 1st Year

संस्मरण

यह 12 अगस्त 2023 में लगातार बारिश के समय घटित घटना बमबोला नामक स्थान की है। यह गांव मंडी जिला में स्थित है। वे लोग कनक की फसल को काटकर उसका आटा बनाते हैं जिसे वे लोग नए अनाज के रूप में मानते हैं। उस गांव में प्रत्येक घर बहुत दूर-दूर स्थित है। वहां चारों ओर पेड़-पौधे हैं। घर के नज़दीक उनके खेत हैं जहां पर वे अपनी फसलों को उगाते हैं। 12 अगस्त को वहां मेरे रिश्तेदार के घर कथा थी। उस दिन वे उस नए अनाज को पहली बार बनाते हैं। हम भी वहां उस अनाज के भोग पर गए थे। उस घर में 6 सदस्य रहते थे। उनके बहुत रिश्तेदार उस दिन वहां आए थे। मैं और मेरी बहन खाना खाकर अपनी मौसी के घर चले गए थे। वहां 2 बजे तक कथा चली। उस समय भी लगातार बारिश हो रही थी। बारिश के कारण घर में काफी चहल-पहल रही। उस दिन उस घर के सभी सदस्य बहुत खुश थे क्योंकि नए-अनाज के लिए उनके सभी रिश्तेदार वहां आए थे। सभी लोग 2 बजे के बाद सो गए थे। उस घर में बहुत लोग रात को रुके थे तो उस घर में उनके दादी-दादा, माता-पिता, भाई-बहन छः सदस्य रहते थे। उस दिन उनके दादा-दादी, माता-पिता दूसरे घर (पुराने घर) चले गए थे। वह लड़की उस दिन बाकि 17 लोगों के साथ कथा कर रही थी। कथा समाप्त होने के बाद सभी सो गए थे।

लगातार बारिश के कारण उस घर के पिछली तरफ केलो का पेड़ उस घर पर गिर गया। जब मैंने वह आवाज़ सुनी तो मैं बहुत घबरा गई। मेरी मौसी बाहर निकली तो उन्होंने देखा की घर पर पेड़ गिरा हुआ था। वे घबरा गए थे उन्होंने मुझे तथा घर के बाकि सदस्यों को बाहर आने के लिए आवाज़ दी। मौसी की आवाज़ सुनकर मैं बहुत डर गई कुछ क्षण के लिए तौ मैंने यह सोचा कि मौसी को कुछ हो गया, जब मैं बाहर गई तो मैंने देखा उस घर पर पेड़ गिरा हुआ था। तब मैंने और मौसी ने गांव में सभी लोगों को उस घटना के बारे में बताया। सभी लोग छाते लेकर वहां एकत्र हुए। तब हमने देखा की भूस्खलन के कारण वह पेड़ उस घर पर

गिरा हुआ था। उस समय भी भूस्खलन हो रहा था। इधर-उधर पेड़ होने के कारण सभी को यह डर लग रहा था कि कहीं यह पेड़ हमारे ऊपर न गिर जाएं। वहां सभी लोग बातें कर रहे थे कि कैसे जाएं। उस स्थिति को देखकर मेरे रोगटें खड़े हो गए थे। मैं बहुत घबरा गई थी। हम उन्हें बचाने में असमर्थ थे। बारिश के कारण स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रहा था। मोबाइल का नेटवर्क चला गया था, बिजली भी चली गई थी। हम किसी को भी सहायता के लिए बुलाने में असमर्थ थे।

मुझे उस घटना से अपने माता-पिता की बहुत चिंता हो रही थी। उनसे मेरी बात न होने के कारण मुझे उनकी बहुत चिंता हो रही थी। मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं। एक तरफ उस घर में दबे सदस्यों की चिंता हो रही थी कि उन्हें कैसे निकाले दूसरी तरफ अपने माता-पिता की बहुत चिंता हो रही थी। मुझे डर लग रहा था कि इस लगातार-बारिश के कारण मेरे परिवार के सदस्य सुरक्षित होंगे या नहीं। हम उन्हें बचाने में असमर्थ थे। मैं खुद को बेबस महसूस कर रही थी क्योंकि हम कुछ भी नहीं कर पा रहे थे। उस स्थिति को देखकर सभी ने यह निर्णय लिया कि सुबह होने का इंतजार किया जाए। 3 बजे से 6 बजे होने तक ऐसा लग रहा था कि मानों समय बहुत आराम से हो रहा था। मैं सोच रही थी कि कब सुबह हो ताकि हम लोगों को बाहर निकाल पाएं। प्रत्येक क्षण बहुत घबराहट हो रही थी कि सुबह होते ही क्या होगा तथा लोग ठीक होंगे या नहीं। जब सुबह हुई तो मैंने देखा कि घर पूरी तरह से टूट चूका था।

घर का केवल मलबा ही शेष रह गया था। लोग मलबे के नीचे दबे पड़े थे। हम सभी ने मिलकर मलबे को हटाया। उसमें 7 लोगों की मृत्यु हो चुकी थी। 11 लोग बहुत बुरी तरह से घायल थे। मृत लोगों में उस घर की बेटी, एक औरत, उसकी बेटी, उसकी सास, एक लड़का, एक पुरुष, एक बूढ़ी औरत मृत थे। उस समय लगातार बारिश के कारण सड़क जगह-जगह से टूट चुकी थी। डॉक्टर कटौला से पैदल चलकर आए तथा घायल लोग का इलाज किया गया।

उस दिन वहां शोक का माहौल था। उस लड़की की मां, पिता, भाई अपनी बेटी का मृत शरीर देखकर ज़ोर-ज़ोर से रो रहे थे। उन्हें देखकर मेरी आंखों में आंसू भर गए। लड़का उस घटना में मर गया था उसकी माता भी उस दिन वहीं रुके थे। वह अपने बेटे को ढूंढती रही जब उन्होंने उसका मृत शरीर देखा तो वह बेहोश हो गई थी। उस बारिश को देखकर लोग सुबह से उस दिन यही बातें कर रहे थे कि यह बारिश ज़रूर कुछ नुकसान कर देगी। लोग खेतों में उगाई फसलों पर होने वाले नुकसान की बातें कर रही थी। कुछ लोगों के सेब के पेड़ भी गिर चुके थे।

मैं उस भयानक दृश्य को यह सोचती रही कि अगर हमने अपनी जान के बारे में न सोचा होता तो हम उन्हें बचा पाते। उनके माता-पिता को देखकर मुझे लग रहा था कि मेरे माता-पिता को भी यह खबर सुनकर मेरी चिंता हो रही होगी। सभी लोग एक-दूसरे को यह कह रहे थे कि जो किस्मत में होता है वह होकर ही रहता है। जो होता है उसे कोई टाल नहीं सकता। भगवान के आगे किसी की नहीं चलती।

उन लोगों के मृत शरीर को बारह निकाला गया तथा उनके मृत शरीर को जलाया गया। उस घटना में किसी ने अपने माता, किसी ने पिता, किसी ने बच्चे खो दिए। इस भयानक दृश्य को देखकर सभी लोगों को अपने बच्चों की चिंता हो रही थी।

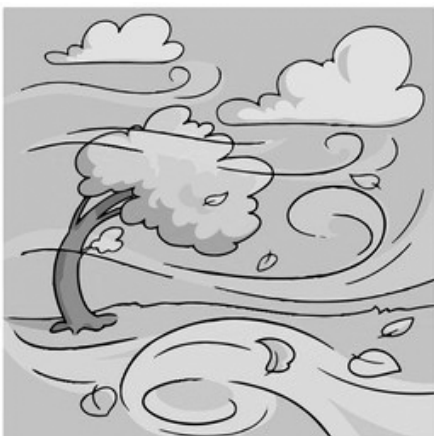
फिर उस दिन दोपहर 12 बजे मैंने अपने माता को फोन किया उनसे मेरी बात हुई वे बता रहे थे कि मुझसे वे मेरी बहन से बात न होकर उन्हें हमारी बहुत चिंता हो रही थी। उन्हें यह खबर सुनकर चिंता हो रही थी कि क्या हम भी उस घर में थे? क्या हम ठीक हैं? जब मैंने उन्हें इस घटना के बारे में विस्तार से बताया तो वे उन लोगों के प्रति बहुत दयनीय भाव प्रकट कर रहे थे। मैंने उनसे घर के सभी सदस्यों के बारे में पूछा कि क्या सब ठीक है। फिर उन्होंने मुझसे कहा कि तुम घर आ जाओ हम घर जाने की तैयारी कर रहे थे। परंतु उन लोगों की उस स्थिति को देखकर मुझे उनकी चिंता हो रही थी कि क्या अब वे लोग अपने परिवार के बगैर खुश रहेंगे। वे अपने बच्चों के बारे में

यह सोच रहे होंगे कि यदि हमने अपने बच्चों, बहुओं, बेटों को न भेजा होता तो आज वे ठीक होते, उनके साथ कोई भी घटना घटित नहीं होती।

लोग यही बातें कर रहे थे कि यदि यह बारिश ऐसी होती रही तो और पेड़ भी गिर सकते हैं। अब लोग उस घटना के बाद बहुत डर चुके थे। जिन्होंने अपने परिवार के सदस्यों को खोया वे इस घटना को कभी भूला नहीं पाएंगे।

उस घर के सदस्य यह बोल रहे थे कि हमारी बेटा की जगह हम क्यों नहीं उस घर में रुके। वे अपनी बेटा को खोकर भगवान को बहुत कोस रहे थे तथा खुद को इसका जिम्मेदार मान रहे थे। जब मैं वापिस आ रही थी तो जगह-जगह रास्ते गिर चूके थे। पत्थर रास्तों पर थे। उस समय बारिश थमी थी। मैं और मेरी बहन पैदल चल रहे थे। जब हम घर पहुंचे तो घर वाले हमें सुरक्षित देखकर शांत हो गए थे। हमारे गांव में प्रत्येक व्यक्ति हमें उस घटना के बारे में पूछ रहे थे। मैं इतनी डरी हुई थी कि किसी को भी उस घटना के बारे में सही से बता नहीं पा रही थी। अब मैं आज भी उस भयानक दृश्य को देखती हूँ या सोचती हूँ तो मेरी आंखें भर आती हैं। मुझे उन मृत व्यक्तियों के चेहरे दिखाई देने लगते हैं। उन माता-पिता का रोना-चिल्लाना आज भी मेरे कानों में गुंज रहे हैं। मैं इस घटना को कभी भी भूला नहीं सकती।

लक्ष्मी बी कॉम द्वितीय सत्र।



हिमाचल में प्राकृतिक आपदा

हिमाचल प्रदेश एक बहुत ही खूबसूरत प्रदेश है। यहां के पहाड़, नदियां, मंदिर, पहाड़ों पर बर्फ पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। परंतु जो चीज दूर से दिखने में जितनी सुंदर होती है वह उतनी ही भयावह भी होती है। पहाड़ों पर एक बात सभी को सताती है वह है प्राकृतिक आपदाएं।

हिमाचल में यही आपदा जून 2023 को आई। जून के महीने में लगातार बारिश होने के कारण पहाड़ों पर जल स्रोत भर गए तथा ज़मीन भी बारिश के पानी से रच गई। बारिश का पानी पहाड़ों से इकट्ठा होकर नालों में इकट्ठा होने लगा था। नालों ने इतना भयानक रूप धारण कर लिया कि उन्हें देखकर भी डर लगने लगा। जब नाले नदियों में मिले तो नदी ने भी भयानक रूप ले लिया। नदी ने अपने सामने आने वाली हर चीज को ताश की तरह वहा लिया। मैदानी इलाकों में नदी ने घरों को नष्ट किया कई लोगों के घरों में पानी घुस गया।

हिमाचल प्रदेश में अब से पहले इतनी बारिश नहीं देखी गई। मॉनसून में लगातार बारिश के कारण बाढ़ ने प्रदेश के लोगों तथा संपत्ति दोनों को नुकसान पहुंचाया। कई गांव जो शहरी जीवन से दूर थे तथा वहां सड़क पहुंचाई गई थी, वह सड़क तहस-नहस हो गई। बरसात के प्रकोप के कारण हर जगह 200 मीटर की दूरी पर भू-स्खलन हुआ। पहाड़ों पर कई लोगों के घर भी भू-स्खलन की चपेट में आए जिस कारण वे मलबे में दब गए तथा कई लोगों को अपनी जान भी गंवानी पड़ी। लगातार बारिश के साथ-साथ कई जगहों पर बादल फटे जिस कारण एक साथ सारा पानी निचले क्षेत्रों की ओर गया। कुल्लू जिले में सबसे पहले बरसात का मंजर शुरू हुआ। यहां की पार्वती घाटी में बहुत बादल फटे मैदानी इलाकों के घर, इमारतें, फ़ैक्टरियों को साथ ले गई। वे इसके लिए तैयार भी नहीं थे। सरकार द्वारा फोर-लेन निर्माण द्वारा पहाड़ों को काटने के कारण पहाड़ दरकने लगे तथा पहाड़ का मलबा हाइवे पर गिरने लगा। फोर-लेन निर्माण से साथ लगते गांव भी उसकी चपेट में आ गए। थलौट गांव में लोगों को अपने घरों को छोड़ना पड़ा। उनके घरों में दरारें आ गईं तथा कभी भी सारा पहाड़ गांव को नष्ट करे उससे पहले उन्होंने गांव छोड़कर किराए के घरों में रहने लगे। नदी का जलस्तर इतना बढ़ गया था कि पानी नेशनल हाइवे पर से बहने लगा था। बाढ़ के कारण सड़क नष्ट हो गई जिससे यातायात परिवहन बंद हो गया। दूसरे राज्यों से आने वाले ट्रक एक ही जगह फंसे रह गए। बाढ़ भू-स्खलन

के कारण बिजली के पोल टूट गए जिससे हर जगह बिजली कट गई। फोन के सिग्नल भी आना बंद हो गया। यदि किसी जगह कोई मदद पहुंचानी हो तो पहुंचाना असंभव हो गया। हिमाचल प्रदेश की भौगोलिक संरचना ऐसी है कि दूर-दराज के प्रभावित लोगों तक शीघ्र मदद पहुंचाना कठिन था। हिमाचल सरकार के पास इतने संसाधन भी नहीं थे कि वे प्रभावित लोगों की शीघ्र मदद कर सके।

कुल्लू, मनाली, मणिकर्ण, सैंज घाटी का संपर्क पूरी तरह से कट गया जिससे वहां फंसे सभी पर्यटकों की खबर सरकार के पास पहुंचाना अत्यधिक कठिन हो गया। भुंतर के साथ लगते हाथिथान में 150 मीटर की जगह सड़क समेत ब्यास नदी की चपेट में आ गया। मंडी ज़िला में ब्यास नदी तथा सुकेती खड्ड पर बना पुल ब्यास नदी की चपेट में आ गया। औट का पुल जोकि 30 साल पुराना था वह भी नदी में प्रवाहित हो गया। मंडी ज़िले में बाढ़ के कारण कई लोगों के घर उजड़ गए। कुल्लू जिले के डैमों का पानी ओवर होने के कारण डैमों को खोल दिया गया जिस कारण मंडी में भयंकर बाढ़ आई। बादल फटने के कारण मलबा बस स्टैंड तक पहुंच गया। मंडी में आपदा से सिराज घाटी भी बहुत प्रभावित हुई। मंडी में सात लोगों की मृत्यु आपदा के कारण हुई। राजधानी शिमला में भी बरसात ने खूब कहर बरसाया। बादल फटने तथा अत्यधिक बारिश के कारण पहाड़ों पर बने घर भूस्खलन की चपेट में आ गए। शिमला के शिव मंदर में पूजा करने गए लगभग 20 लोग भूस्खलन की चपेट में आए तथा उन्हें जिंदगी गंवानी पड़ी।

हिमाचल में लगभग 400 लोगों की मौत हो चुकी है। लगभग 12000 करोड़ का नुकसान राज्य को हुआ। इस नुकसान को भरने के लिए मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू जी ने अन्य राज्यों तथा केंद्र से भी मदद मांगी। मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू जी ने सभी बाढ़ प्रभावित लोगों की 1-1 लाख रुपये देने का वचन दिया। दूसरे राज्यों ने भी इस घड़ी में हिमाचल का साथ दिया। उन्होंने अपने-अपने हिसाब से धन, अनाज इत्यादि से सहायता की।

ऐसी प्राकृतिक आपदा हिमाचल वासियों के लिए पहली बार थी। लोग इससे बचने के लिए तैयार नहीं थे। यदि हमे ऐसी आपदाओं से बचना है तो हमें पहले से ही सतर्क रहना होगा।

आर्यान वर्मा, बीए, तृतीय वर्ष।

Flood Devastation in Himachal Pradesh



Himachal faced heavy floods in the months of July-August in the year 2023. This time was very terrible for Himachal. The people living here had to face a lot of difficulties. Many houses were washed away with the flood. Apart from this, the river also destroyed many roads vehicles and bridges. There was no light in the houses for several days. Due to lack of water, many people had to go to far off places to get water. There was no internet for several days. Due to lack of Internet we could not talk to our relatives. Apart from this, tourists also remained stuck in Himachal for many days.

Rain caused huge devastation in Himachal Pradesh last year. Due to this, more than

500 people died and the State Government also suffered a loss of about 12 thousand crores.

I clearly remember the visual of the temple of Lord Shiva in Mandi that got submerged in water but did not overflow.

Truly this Panchvaktra temple of Lord Shiva is a miracle. The floods have taught a lesson that modernity has flowed away but history still stands firm.

Really, that month of July was very terrible one.

Minakshi, B.A 1st Year.





English Section



We are a Family



Panarsa, Himachal Pradesh, India
Near Govt. Degree College Panarsa, Panarsa, Himachal Pradesh 175121,

FROM THE STUDENT EDITOR



As we welcome the new academic year it is my pleasure to introduce the latest edition of our college magazine Arjiky. This magazine is a culmination of the hard work and creativity of a talented students, and faculty members. Through the writings of the English section an effort has been made to encourage the students to write about last year's natural disaster which we all have experienced for first time in our life. The situation was full of challenges during the floods. In some sections some students have written life experiences, movie review, poems and other social issues. I hope readers will feel invigorated after reading these articles the writers will feel motivated and will be able to improve their creative skills through your valuable feedback. I sincerely thank our worthy Principal Dr. Ursem Lata for her guidance and support. I am thankful to Prof. Charu Ahluwalia for showing her faith in me and giving me the responsibility to carry out the task of student editor of this section. Immense gratefulness must be shown to all the staff members for their encouragement and cooperation for the successful completion of this annual magazine.

Happy Reading !

Monika

BA 2nd year

Student Editor (English Section)

My Experience of College Life

There are many ups and downs in everybody's life. I also had a very remarkable and special event of three years in college. It has been rightly said that experience is the best teacher. Experience teaches a lot more things and tells us how strong we can be in difficult situations and circumstances. The biggest change in my life was when I got admission in Govt. Degree College Panarsa. I met many friends. College life is very important and special part of a youth life. When I was in first year I met with final year seniors and teacher who taught about the rules of the college. I got a lot of information from my teachers and seniors as well as my classmates. I had very kindhearted fantastic teachers in my college. They also helped me in difficulties and guided me for my bright future. My teachers motivated me in very simple way. They taught me how to organize my life and appreciate studies, friends, family and relationships. Like my teachers and seniors, my parents also motivated and appreciated me always. In college, I spent most of my time in college library where I learned that the books are our very loyal friend and helps us in every field. By reading books they become my company and my best friend also. My college experience has taught me to be patient and deal with any situation wisely and calmly. There has been a lot of change in my behavior also. The seniors, teachers and my parents have improved my personality a lot. College life changed my life to a great extent. We should learn something from every experience of life.

Shivani, B.com 3rd Year.

Key to Mental Well Being is Within You!

Behind every sweet smile, there is a bitter sadness that no one can ever see and feel.

Some of us have a melancholy that stays for a long time. The brain helps us think, act and feel. When we are sad all time, we don't feel like doing anything. It makes us feel unwanted. It may feel like a big monster is sitting on you. It even feels like the monster will never go away. This monster is called depression.

When you see someone who is sad for no reason, talk to them. You may not understand how it feels, but you can see it is hard and you would like to help. If you yourself feel that way, tell your family and friends. It is also helpful to talk to someone like a psychologist or psychiatrist. So, don't hide behind a curtain. Just open up your windows of emotion and let your emotions shout, cry, and laugh but do not sulk. The key to mental well being is within you. Look within for happiness and you will realize that no one else can make you sad.

**Sakshi Sharma,
BA 1st year**

DISCIPLINE

A social framework is incomplete without human beings, and rules and laws must be in place for any system to function. Individuals or system are considered disciplined when these norms regulate human behavior and create a sense of organization. Discipline benefits every facet of life, whether it is human or other. People are encouraged to take responsibility for their actions when it instills a sense of accountability and credibility.

Sports persons' daily routines, business people's regular schedules and children's first step all involves discipline. However, it is equally important to realize that not everyone follows the same rules. Unlike "terms and condition" that set out their demands, discipline regimen should always be designed to meet individual requirements first.

In today's fast paced society, getting caught up in the rat race and neglecting our personal goals is easy. This can lead to issues like restlessness, wary and even more severe mental struggles. While keeping up with the competition is essential, prioritizing our aspiration is crucial. Discipline may have varied interpretations, but its ultimate purpose remains, providing us with a clear direction in life. Looking at the history of successful individuals, it's clear that discipline is essential in achieving one's goals. However, we can still adhere to a flexible schedule every minute of the day. Small consistent steps towards our ambitions can eventually lead us to become a better version of ourselves.

Aryavart Thakur, B.A. 1st Year

God Bless our Teacher

Teachers are the persons who step into our life, when we are small, they are there. To guide us on the path of knowledge. Making us fit to join college. They tell us what is good and bad. They tell us what is right and wrong. Learning all this, to be upright. They scold us and sometimes punish us. But actually they love us. And like their own children do treat us. They teach us value of truth and honesty. They teach us to be obedient and worthy, They to their best to keep us happy and gay, when they praise us we call it a day for their health and long life. To the almighty we pray. God bless our dear Teacher.

Human Life

Human life is a table tears. One comes in this world against his will and he follows the path other people tell him to follow. When one is born, parents and relatives become very happy. When he grows up, he is sent to school where he is afraid of the stick of his teacher and he always goes to school like a tortoise. But when he enters the college his life changes. He thinks he is a hero and never touches the books. The three most important years of his life, he wastes in wandering here and there. After completing the college life he needs a good job for his living. Now he tries to prove himself in which he succeeds after facing many problems and he gets a small job against his wishes. At this stage if he gets married then he spends his life like animals. If he remains a bachelor, he becomes a subject of fun.

Kiran Bedi, BA 1st year

Sikh Belief

According to the Sikhs during third Udasi, the founder of Sikhism Guru Nanak came to this place on 15 August 1574 Bikrami with his disciple Bhai Mardana. Mardana left hungry and they had no food. Guru Nanak sent Mardana to collect food for the longer (the community kitchen) many people donated atta(flour) to make roti. Therewas one problem that there was no fire to cook the food. Guru Nanak asked Mardana to lift a stone and he complied and a hot spring appeared. As directed by Guru Nanak, Mardana put the rolled chapattis in the spring, but to his despair, the chapattis sank. Guru Nanak then told him to pray to God saying that if his chapattis float back then he would donate one chapatti in his name. When he prayed all the chappaties started floating up duly baked. Guru Nanak said that when anyone who donate in the name of God his drowned items float back.

Sneha Negi, BA II year

Alone, not Lonely

Being alone, truth and beauty can be seen only in complete solitude. And whatever is great in life is attained by those who have the courage to be alone. The deeper secrets of life open their doors only in solitude, and the soul attains to love and light, only when all is calm and quiet. The seeds sprout which are lying deep in the soil of our being, containing all our bliss in them. The growth takes place from within towards outside. Remember, truth grows from inside. Artificial flowers can be imposed from outside but as far as the real flowers are conserved, they grow within.

Take a few moments away from the hustle and forget the concepts of place and time around you, and your so-called personality, and the 'I' that is born out of it. Empty your mind of all that keeps it constantly full. whatsoever comes to your mind, know well that you are not it and throw it out. Drop it all- everything-your name, your country, your family. Let all of it disappear from you memory and remain like a blank sheet of paper.

This very path is the path to our inner solitude. It is through

this that the inner beauty finally appears

Sakshi, BA 1st year

I want to be like you

Thank you Teacher!

For being my life's role model when I consider all you've taught me and reflect on,

The kind of person you are, I just want to be like you!

A smart, interesting, engaging, positive and confident human being.

I want to be like you!

Well informed and easy to understand,

I want to be like you!

Thinking with heart as well as mind, gently nudging us to do our. But with sensitivity and insight, I want to be like you

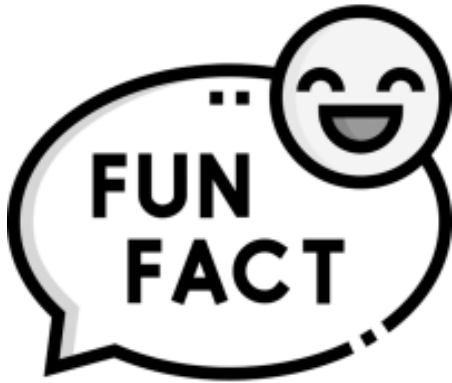
Time Energy, Talent.

to ensure the brightest possible future for each of us.

Thank You Teacher!

For giving me a goal to shoot I want to be like you!

Ravi Sharma, B.A 1st Year.



Life is an Examination

God is the great examiner,
We all are students.
This life is the answer sheet.
On which we have to take exam.
Time allowed is three hours.
The first is childhood.
Second is youth.
The third is old age.
The bell of the last hour is rung
By the Messenger of God.
The exam is over the paper is
snatched.
The examiner is everywhere,
The paper was long.
The time was short,
If we fail, we come again to the
battle field,
If we pass, we go to the heaven,
To return no more.

Lalita Thakur, B.A. 1st Year.

**A PANGRAM SENTENCE
IS ONE THAT CONTAINS
EVERY LETTER IN THE
LANGUAGE.**

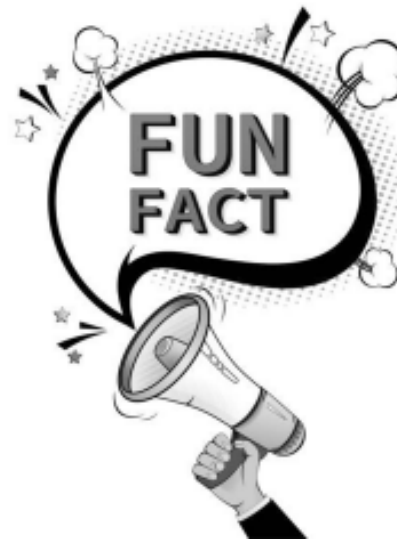
Movies of College Life

Classes- Bardashat
Attendance- Hera Pheri
Classroom- No Entry
Teacher- Jaani Dushman
Exam- Evil Dead
Examiner- Don
Friend during paper- Hum Aapke
Hain Koun
Viva - Encounter
Marking- Andha Kanoon
Exam Time- Qayamat
Cheating - Lage Raho Munna Bhai
Question Paper- Ek Paheli
Answer Sheet- Kora Kagaj
Result- Sadma
Pass- Chamtakar
Fail- Devdass
Future- Na Tum Jano Na Hum

Shivani, B.Com 3rd Year.

Exams and Cricket

Examination Hall - Pitch
Examinee - Batsman
Examiner - Umpire
Paper setter - Bowler
Questions - Balls
Marks - Runs scored
Mark sheet - Score board
Tough Questions - Fast bowling
Distinction - Century
Tough marking - Good fielding
Peon - Waterman
A case of copying - Catch out
Blank answer sheet - Clean
bowled
Talking in Hall - Run out



Some modern definitions

1. Father - A banker provided by nature.
2. Pocket - It's that which is always empty except for the first few days the month.
3. Examination - Horror movie.
4. Lecture - A non-stop radio only for the students.
5. College - It is a place where papa pays and child plays.
6. History - It is a lori only for students.
7. Hostel - A modern hospital visited by the patients suffering from a disease called study.

**Kiran Bedi,
BA 1st year**

The Pain of Partition of India

The Partition of India in 1947 was a significant event in South Asian history. It resulted in the division of British India into two independent nations, India and Pakistan. This separation was based on religious lines, with India being predominantly Hindu and Pakistan being created as separate homelands for Muslims. The partition was the result of religious tensions between the Hindu and Muslim communities, fueled by demand for a separate state for Muslims. The violent displacement of millions of people created a legacy of trauma and insecurity that continues to affect Indian society to this day. The partition was the change of political borders and the division of other assets that accompanied the dissolution of the British Raj in the Indian subcontinent and the creation of two independent dominions in South Asia; India and Pakistan. India's partition in 1947 continues to evoke strong emotions even after seven decades.

Point of View: The partition of India also had significant implications for Indian society. The displacement of millions of people led to the creation of new wave of refugees, who faced significant challenges in resettlement and integration into their new communities. The partition of India had far reaching consequences for Indian society, politics and international relations. The partition of India resulted in the largest mass migration in human history. Millions of Hindus and Sikhs fled from Pakistan to India and millions of Muslims fled from India to Pakistan. The partition was the result of religious tensions between the Hindu and Muslim communities, fueled by demands for a separate state for Muslim. The violent displacement of millions of people created a legacy of trauma and insecurity that continues to affect Indian society to this day. The past of the refugees continue to haunt the nature even till today. Such large scale migration and creation of refugees asks a valid question that why can't we all co-exist amicably irrespective of our prestige and differences?

Sakshi Sharma, B.A 1st Year.

The Pain of Partition of India

The Partition of India is known as one of the most devastating events in Indian history. Religious violence increased throughout the subcontinent. Thousands were left homeless and few had food to eat. Hindus blamed Muslims and the Muslims blamed the Hindus.

Religious violence increased throughout the subcontinent. As both religious groups killed each other in civil uprising out of rage and hunger, leaders like Gandhi tried to prevent the separation of the states and calm tension. The Indian partition caused one of the largest mass migrations in human history. By 1948, as the great migrations drew to a close, more than fifteen million people had been uprooted, and between one and two million were dead. Nine million refugees crossed on foot creating columns of human bodies trailing for miles. Children, parents and grandparents trekked on foot in rags, exhausted, starved, and crushed with sorrows. Along with millions of saddened civilians that lost their homes, families, and livelihoods, the economic situation in India & Pakistan continued to deteriorate. Death trains were used to carry thousands of dead bodies to be dealt with as British couldn't keep up with the number of people that died. It was unfortunate that Indian and British leaders greed for power was the cause of death for over two million people.

Tensions created during the India's partition are still felt today. The India-Pakistan border is one of the most fortified borders in the world and India and Pakistan have fought over five wars since the partition was put into place. Pakistan suffers at the hands of the economic superpower like India to this day, and India struggles with the need for more land. Kashmir, a northern region, continues to be a sensitive subject between India and Pakistan. The tense border, the wars fought, and never-ending debated over land between Pakistan and India are all examples of why Mahatma Gandhi was trying to prevent the partition. Yet, like most genocides, wars, or economic crises, power ruined it all. Such pains of history are a lesson for future which teach that power and greed destroy humanity.

Lalita Thakur, B.A 1st Year.

Title: Sukhee

Director: Sonal Joshi

Producer: Bhushan Kumar, Krishan Kumar, Vikram Malhotra.

Cast: Shilpa Shetty Kundra, Amit Sadh, Kusha Kapila, Dilnaz Irani, Pavleen Gujral, Chaitannya Choudhry.

Writer: Radhika Anand

Duration: 2 hours 21 minutes

Release date: 22 September 2023

Movie Review

Sukhee is a film that attempts to tell a light-hearted, slice of life story but unfortunately falls short in delivering a truly engaging and meaningful narrative. While it has a promising premise of a middle-aged housewife seeking to rediscover herself during a school reunion trip to Delhi, the execution leaves much to be desired. Shilpa Shetty Kundra's performance as Sukhpreet Kalra or Sukhee, fails to create a genuine connection with the audience. Her portrayal lacks depth and nuance, making it challenging to empathize with her character's journey. Despite her efforts, the character remains one-dimensional and Sukhee's transformation from a housewife to a woman seeking her identity feels rushed and unconvincing.

The supporting cast, including Amit Sadh and Kusha Kapila, are underutilized and do not contribute significantly to the story's development. The lack of character development in the supporting roles adds to the film's overall shallowness.

The directing by Sonal Joshi does little to elevate the material, as the film meanders through Sukhee's experience without providing a cohesive or engaging narrative structure. The writing by Radhika Anand, Parlomi Dutto, and Rupinder Inderjit lacks depth and fails to explore the complexities of Sukhee's transformation adequately.

Additionally, Sukhee struggles with pacing issues, with the transformation of the protagonist from a housewife to an independent woman feeling abrupt and unrealistic. The film could have benefited from a more gradual and nuanced exploration of Sukhee's character.

Overall, Sukhee is a missed opportunity to tell a compelling story of personal growth and self-discovery of a woman. Despite its promising premise, the film's lackluster execution, underdeveloped characters, and rushed storytelling make it a disappointing viewing experience.

Monika Thakur, B.A 2nd Year.

Movie Title :- 12th Fail

Director :- Vidhu Vinod Chopra

Cast : Vikrant Massey, Medha Shankar, Anant V Joshi, Anshuman Pushkar and others.

Genre :- Biography, Drama.

Writer : Vidhu Vinod Chopra

Duration :- 2 hours 27 minutes

Original Language : Hindi

Release date : 27 October, 2023

About :- 12th Fail, directed by Vidhu Vinod Chopra is based on a novel by Anurag Pathak, which was inspired by the real-life story of IPS Officer Manoj Kumar Sharma and his wife IRS Officer Shraddha Joshi..

Storyline: The story revolves around the journey of Manoj Kumar Sharma (Vikrant Massey), a 12th class student, from Chambal district. He belongs to a poor family where his father gets suspended from the agriculture department due to his dishonesty. Manoj studies in a school where his headmaster encourages student to cheat during exam. Meanwhile an honest and strict DSP Dushyant Singh (Priyanshu Chatterjee) arrives during the exam and stops the cheating process. He arrests the headmaster for encouraging cheating. Manoj one day meets the same DSP again and he gives him the motto of 'not cheating'. He explains, Manoj that honesty is the most important thing in life. Inspired by the DSP's words, Manoj begins his mission to become an officer. The movie explores Manoj's journey to success and the challenges he faces.

Message : The movie gives the message of determination, resilience, integrity, patience, hard work and the power of education. The movie also delivers a very important message to restart. Manoj's journey was full of failures but throughout his journey he did not give up. The movie reminds us that it doesn't matter how many times you fail, what matters is how many times you pick yourself up and chase your dreams.

It gives the message of hope and belief that dreams can be achieved if you believe in yourself and never give up.

Recommendation :- I would highly recommend to watch this movie. It's not just a movie, it's courage, hard work and most importantly the power of starting again when faced with adversity. Overall, 12th Fail is a must watching movie.

Monika Thakur, B.A 2nd Year

The History of Prasher Lake and Dev Barnag (Snower Valley)

Once upon a time there was a demon in Prasher lake who had defiled Prasher lake. An eagle had thrown a buffalo's head into the lake and a demon started living in it. He had completely defiled the water of the lake. And the water level slowly started vanishing. The temple and the surrounding area started sinking.

Sage Rishi Prasher felt troubled and soon Rishi Prasher started duowing in the water of the lake. To save Rishi Prasher, 18 Kardu, 16 Baziri and all the Gods and Goddess came and stood there but no one could do anything. And then Rishi Prasher stood at a Dhenkhli place at some distance from there and called out to Dev Barnag Ji. He said that if you are sleeping then you will be awake and then you will be walking. That your grandfather's fortune has completely sunk.

Just as the voice reached Dev Barnag here, at a place called Snower, some people of the village were working in the fields along with a prominent man from there.

That chief was about to cut down the Bhekhal tree, but at that very moment he was possessed by a deity him and he ran away from there. And while running, he reached the peak of Prasher through unknown paths which is known as sarandi.

The Gur of Dev Barnag stood in front of 18 kardu and 16 Baziri. There was the priest of Rishi Prasher. He had a 'Dharach' in his hand. Due to the

grace of Dev Barnag Ji, he snatched the Dharach from his hand. And he Jumped into the lake with Gujag in one hand and Dharach in the other hand which was burnt with fire. And that Dharach kept burning in the water for 7days. Many days passed and nights passed and the demon cursed him and spent 7 nights and 7 days in the lake. They made 4 tunnels in the lake to reduce the water level.

Dev Barnag's Gur asked Rishi Prasher from where to get the remaining water? So he told that he took out water from Deuri Ghat and the Gur also took out water from Deuri Ghat. Due to which the whole village got washed away in water. And coming out of the water, the Gur had a demon's head in his hand that grows there even today.

Rishi Prasher was happy

and gave a piece of grass to Gur. But on the way Gur started thinking what has been given to him and he started throwing those grasses one by one and that grass started turning into a plant like a snake. The grass left in the hand became golden after reaching home. And Gur's family should think that he is dead.

Even today it is believed that whenever Rishi Prasher comes to his senses, he remembers Dev Barnag, first of all or nothing is done without him.

And he is also considered the god of the disease. There are many more stories about him. This story is still heard and remembered in Mandi-Kullu Dev Barnag and Prasher Rishi is considered to be the worship able deity of Mandi-Kullu.

Sneha Negi, B.A. 2nd Year



Manikarn

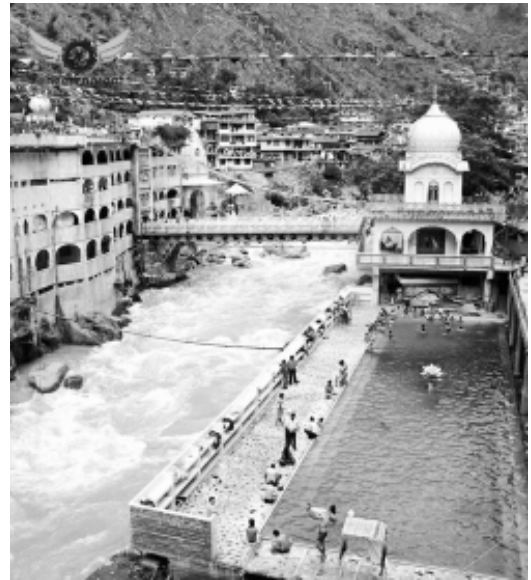
Manikarn is located in the Parvati valley on river Parvati, northeast of Bhunter, in the Kullu District of Himachal Pradesh. It is at an altitude of 1160m and is located 5 km from Kasol, about 45 Km from Kullu and about 35 Km from Bhuntar.

This small town attracts tourists visiting the hot springs and pilgrim centres of Manali and Kullu. An experimental geothermal energy plant has also been set up there.

Manikarn is a pilgrimage centre for Hindus and Sikhs. The Hindus believe that Rishi Manu recreated human life in Manikarn after the flood, making it a sacred area. It has many temples and a gurudwara. There are temples of the Hindu deities like Rama, Krishna and Vishnu, The area is well known for its hot springs and its beautiful landscape.

The legend of Manikarn says that while walking around, Lord Shiva and Goddess Parvati once chanced upon a lush green place surrounded by mountains. Enamored by the beauty of the place, they decided to spend some time there. It is believed that they actually spent eleven hundred years in Manikarn.

During their stay, Goddess Parvati lost her mani (precious stones) in the water of a stream. Upset over the loss, she asked Shiva to retrieve it. Lord Shiva commanded his attendant to find the mani for Parvati. However, when they failed, he was extremely angry. He opened his third eye, a tremendously inauspicious event which led to disturbances in the universe. An appeal was made before the serpent god, Sheshnag, to pacify lord Shiva. Sheshnag hissed, thereby giving rise to a flow of boiling water. The water spread over the entire area resulting in the emergence of precious stones of the type Goddess Parvati had lost, and Lord Shiva and Goddess Parvati were happy again.



Asha

FUN FACTS ABOUT ENGLISH

- The most used letter in English is "e".
- Three quarters of all mails are in English.
- English is the most widespread language.
- It contains vocabulary from all over the world.
- It has the largest vocabulary (500 000 words).
- An average native speaker uses 15-20 000 words.
- Shakespeare used 30 000 words.
- What about you? How many words do you know?



हिन्दी अनुभाग



सम्पादकीय



प्रिय पाठको,

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि वर्ष 2023-2024 का अर्जिक्या का अंक आपके सामने प्रस्तुत है। इस पत्रिका में प्रकाशित करने के लिए बहुत-से छात्र-छात्राओं की स्वरचित रचनाएं, ज्ञानवर्धक जानकारियां व मनोरंजक सामग्री हमें प्राप्त हुई हैं, लेकिन इस वर्ष 'अर्जिक्या', 'वर्ष 2023 में हुई आपदा' विषय पर आधारित है। इसलिए विद्यार्थियों ने इस अंक में आपदा से संबंधित घटनाओं का आंखों देखा चित्रण कविता, संस्मरण और निबंध के माध्यम से किया है। आपदा से आम जनजीवन किस तरह प्रभावित हुआ है, इसलिए भविष्य के लिए भी हमें सदैव सजग एवं जागरूक रहने की आवश्यकता है ताकि हम परिस्थितियों का सामना कर सकें। आपदा में गांव, परिवार और प्रदेश का चित्रण विद्यार्थियों ने किया है, मुझे आशा है कि आप पत्रिका को पढ़कर उन लोगों की पीड़ा को समझ सकेंगे। जो गलतियां हम से हुई हैं, भविष्य में हमें उनसे सबक लेना चाहिए।

मैं उन सभी विद्यार्थियों का धन्यवाद करना चाहती हूं, जिन्होंने अपनी रचनाएं दीं। मैं आशा करती हूं कि विद्यार्थी हमेशा विभिन्न विषयों एवं समसामयिक घटनाओं को कलमबद्ध करते रहे ताकि पठन-पाठन में आप सबकी रूची बनी रहे।

प्रो. अनीता
प्राध्यापक-सम्पादक
हिंदी अनुभाग

मैं धन्यवाद करना चाहती हूं हमारे सभी अध्यापकों का, जिन्होंने मुझे छात्र सम्पादक के रूप में चुना। मुझे बहुत खुशी हो रही है कि मुझे 'अर्जिक्या' पत्रिका में छात्र-सम्पादक के रूप में कार्य करने का अवसर मिला है।

विद्यार्थी जीवन में पत्रिका का विशेष महत्त्व होता है। पत्रिका महाविद्यालय के छात्रों के अंदर छिपी भावनाओं का प्रतिरूप भी होती है। विद्यार्थी कल का नागरिक है, इसलिए वह अपने समय का चित्रण पत्रिका के माध्यम से उजागर करते हैं। पत्रिका में विद्यार्थी अपने विचारों और भावों को व्यक्त करते हैं।

पत्रिका का महत्त्वपूर्ण योगदान है। पत्रिका विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं भगवान से प्रार्थना करती हूं और शुभकामनाएं भी देती हूं।

सविता
छात्र-सम्पादक,
हिंदी अनुभाग

पुस्तकालय आज की अहम जरूरत

आज का समय इंटरनेट का युग है कई बार हम यह सोच लेते हैं कि इस कम्प्यूटर युग में पुस्तकों के प्रति पाठकों का लगाव या झुकाव कम हो गया है। हर वर्ग चाहे वो बच्चा, जवान या बूढ़ा हो हर व्यक्ति हर वक्त मोबाइल में ही व्यस्त रहने लगा है। अब वो सोचता है कि पुस्तकों के पन्ने पलटने की क्या आवश्यकता है जबकि हमें एक क्लिक करने पर सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध हो जाती है। गूगल व अन्य ब्राउजर की मदद से वह सारी सूचना एकदम प्राप्त कर लेता है।

मैं इस बात से भी इंकार नहीं करूंगी कि आज का युग सूचना प्रौद्योगिक का युग है पर इतना जरूर है कि अध्ययन के लिए जिस स्थिर भाव और मन की एकाग्रता की आवश्यकता होती है वह केवल पुस्तकालय में गहन व स्वअध्ययन से ही मिलती है। कई बार हम किसी भी विषय की जानकारी हम इंटरनेट में ढूढ़ रहे होते हैं और हम फेसबुक, व्हाट्सएप, इन्स्टाग्राम जैसी समय बर्बाद कर देने वाले एप्लीकेशन भी हमारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं जबकि इन पर भी दी गई जानकारी पूर्ण न सही नहीं होती है। यदि हम अपने विषय की सही जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें

राक्षस नहीं गिन पाया पूंछ के बाल

मैं आपको एक ऐसी कहानी के बारे में बता रहा हूँ जिसके बारे में कभी आपने सुना भी नहीं होगा। कहानी की शुरुआत एक गांव से होती है जिनका नाम था धरमौर वह गांव ज्यादा बड़ा नहीं था। उस गांव में घर बहुत कम थे और वह घर भी बहुत दूर-दूर थे। वहां पर एक परिवार था। एक दिन उस घर में नमक खत्म हो गया। पुराने जमाने में जब नमक खत्म हो जाता था तो नमक लाने के लिए द्रंग की तरफ जाना पड़ता था तो उनके पास नमक खत्म हो गया। उस घर में सिर्फ एक ही मर्द था। तो उसे ही नमक लाने जाना पड़ता उसने जाते समय अपनी पत्नी को कहा था कि मैं एक सप्ताह के अंदर आ जाऊंगा। तो वह नमक लाने चला गया। उसे नमक लाने में देर हो गई। फिर एक दिन रात को एक दानव उनके घर के पास आता है। उसे पता था कि इसका पति घर से दूर है और वह घर में नहीं है उसने सोचा कि उसके आने तक मैं। इन्हें खा जाऊंगा। तो जैसे ही रात हुई तो उस दानव ने घर के बाहर एक पत्थर को फैंक दिया। उसने उस घर के मर्द का भेष धारण कर लिया और घर की महिला को लगा कि उसका पति वापस आ गया है। तो उसने पति के आगमन पर दाल बनाई जो उसके पति की मनपसंद दाल थी और उसने उस दाल में घी डाल दिया। कहते थे कि उस समय दानव घी और दूध नहीं खाते थे। उसके पति ने दाल और घी नहीं खाया परंतु उसकी पत्नी को शक हुआ। उसने सोचा कि रास्ते में इन्होंने कुछ-न-कुछ खा लिया होगा। तो जैसे ही रात को सोने का समय आया तो उस महिला ने बिस्तर बिछा दिया और वह महिला उसका पति जो दानव था और उसका बच्चा सो गया। दानव ने सोचा जैसे ही पूरी रात होगी और यह महिला सो जाएगी तो मैं।

पुस्तकालय में पुस्तकों के अध्ययन से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं सोशल मीडिया की जानकारी सही ना होने के कारण जब हम उस आधी अधूरी जानकारी के आधार पर प्रतियोगी परीक्षा में भाग लेते हैं तो स्वभाविक ही हमें असफलता प्राप्त होती है।

इस लेख के माध्यम से मैं यह कहना चाहूंगी कि अधिक-से-अधिक छात्र व छात्राएं महाविद्यालय पनारसा के पुस्तकालय में रखी गई लगभग 1500 से अधिक पुस्तकों का अध्ययन कर इस सेवा का लाभ उठावें।

हमारे महाविद्यालय में प्रति 2 समाचार पत्र (अमर उजाला, दिव्य हिमाचल) प्रतियोगिता दर्पण, हिम प्रतियोगिता संसार, इंडिया टूडे रोजगार समाचार पत्र व गिरिराज जैसे सामयिक पत्रिकाएं आती हैं। जिनका आप सब पाठकों को निरंतर लाभ मिलता है।

पाठकों को चाहिए कि कक्षागत अध्ययन के साथ पुस्तकालय में आकर अपने में स्वअध्ययन की आदत भी विकसित करें। जिससे आप की मन एवं ज्ञान शक्ति में वृद्धि होगी।

पुस्तकालय में पढ़ने की आदत विद्यार्थी को सफलता की ऊंचाई की ओर अग्रसर करती है।

**बिन्दु सूर्यावंशी,
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष**

इसे खा जाऊंगा और इसके बच्चे को भी रात को सोने से पहले उस महिला के पैर दानव के पैर से जाकर लग गए। वह डर गई उसने सोचा कि मेरे पति के पैरों में तो कोई भी बाल नहीं। यह कोई और है उसने देखा कि दानव सो गया है तो उस महिला ने खुद को और अपने बच्चे को उठाया और वह अपनी गौशाला की तरफ चली गई। वह अपने बैल के सिर के पास बैठ गई। जैसे ही रात के 12 बजे उस दानव ने उस महिला को खाने के लिए ढूंढना शुरू किया उसने देखा कि वह अपने बिस्तर पर नहीं है। उस दानव को इंसानों की सुगंध आती थी तो वह राक्षस भी गौशाला की तरफ चला गया। उसने देखा कि वह दोनों मां बेटे बैल के सिर के पास बैठे हैं इन्हें मैं खा जाऊंगा। जैसे ही वह राक्षस उन्हें खाने के लिए गया तो वह बैल अपने सिंगों के साथ उस राक्षस को मारने लगा। राक्षस ने कहा तुम इन्हें क्यों बचा रहे हो इन्हें मुझे दे दो मुझे इन्हें खाना है अन्यथा मैं तुझे मारूंगा। बैल ने उस दानव के साथ एक शर्त लगाई कहा कि तुम मेरी पूंछ के बाल गिनकर बता दो तो मैं इन्हें तुम्हें सौंप दूंगा। यह सुनकर राक्षस काफी खुश हुआ और उसने शर्त मान ली। तो उसने उस बैल की पूंछ के बाल गिनना शुरू कर दिया। वह जब उसकी पूंछ के बाल पूरे गिनने वाला होता तो वह बैल अपनी पूंछ को हिला देता था जिस कारण वह राक्षस उस बैल की पूंछ के बाल नहीं गिन पाया और सुबह हो गई। जिस कारण उस राक्षस को वहां से भागना पड़ा क्योंकि राक्षस को श्राप था कि धूप लगते ही तुम जलकर भस्म हो जाओगे। तो जैसे ही वह राक्षस भागा तो उस महिला की सांस में सांस आई और उसने उस बैल का धन्यवाद किया क्योंकि उसने उसकी और उसके बच्चे की जान बचा ली। बाद में जब महिला का पति दिन को घर आया और उसने सारी बात अपने पति को बता दी और बाद में उन्होंने उस घर को छोड़ दिया।

हमारे जीवन में लोक गीत का महत्त्व

लोक गीत का महत्त्व :- भारत की परंपरा और संस्कृति का अहम भाग लोकगीत है। क्योंकि लोक गीत ने ही देश की संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों को जीवित रखा हुआ है। कोई भी घटना या उत्सव द्वारा लोकगीत हमारे जीवन में दस्तक देते हैं।

लोकगीत का प्रभाव :- आपदा से संबंधित फसल की पैदावार बारिश के आगमन लोकगीत और लोक कथाएँ मौजूद हैं इन्हे गाते समय एक उत्साह पैदा होता है। इन गीतों को गाते समय गांव और समाज की आत्मा दिखाई देती है। इन गीतों को ध्यान से सुनने से हमारे साथ घटी घटनाएँ फिर से ताजा हो जाती हैं।

हां, इन आपदाओं पर लोकगीत बने हैं। ये लोकगीत विभिन्न प्रकार की आपदाओं और प्राकृतिक घटनाओं को साकार और भावात्मक दृष्टिकोण से दर्शाते हैं। ये गीत सामाजिक संदेशों को सांझा करने का माध्यम भी हो सकते हैं और स्थानीय जीवन की विविधता को उजागर करते हैं। इन गीतों में आपदा के समय जनसमूह की संघर्ष और साहस की कहानियाँ शामिल हो सकती हैं जो समृद्धि और सामूहिक सहयोग की महत्वपूर्णता को प्रतिस्थापित करती हैं। हिमाचल प्रदेश में जुलाई 2023 को भारी बरसात होने के कारण हिमाचल में बाढ़ आ गई थी। कई स्थानों पर बाढ़ फटने के कारण बहुत ही ज्यादा नुकसान हिमाचल को झेलना पड़ा है।

इस त्रासदी में हिमाचल में जान-माल, सम्पत्ति का भी नुकसान हुआ है। हिमाचल के लोक संगीतकारों ने इस त्रासदी पर लोक गीत बनाए हैं। जिसमें वे गीतों के माध्यम से लोगों के संघर्ष को व्यक्त करते हैं।

कुछ लोकगीत इस प्रकार हैं :-

1. देश शोभला हिमाचल हमारा-2
हौड़े काट्टे हुआ हाल-सा माड़ा
देश शोभला त्र.....
2. हर शाम भागों री ये बरखे
लोकी ना करिये तें घरा ते बेघरिये
हर शाम भागों री में वरखे।
3. शिमला शहर बीच वरसी नू बदली
ते केड़ा जुल्म कमाया बैरने वे
ते ऐड़ा जुल्म कमाया
भरी वरसाती ओ.....
4. हौंले-हौंले भगया ओ भलेया
ब्यासा रे ओ पाणियां
आप्पु साऊगी लई जिंदगानीया-2
गुस्सा न कर ओ जलया हमारे ओ पाणियां
आपु पीछे छड़ी गया तू कई वो निशानियां-2

अर्चना भारती
कला स्नातक तृतीय वर्ष।

देश हमारा बहुत प्यारा

बाढ़ आने से तबाह हो गया सारा।।
टूटी सड़के पुल भी टूटे।
स्कूल बंद पढ़ाई भी छूटे।।
कई-कई जाने गई।
नहीं रहा कोई सहारा।।
देश हमारा बहुत प्यारा।
बाढ़ आने से तबाह हो गया सारा।।
डर के मारे रूह थी कांपी
नहीं बचेगा कोई हमारा।।
थोड़ी हिम्मत हमने की।
थोड़ा लोगों ने दिया सहारा।।
बनाया घर हमने दम पे।
हो गए खड़े अपने कदम पे।।
आ गई नई सुबह।
आ गया नया उजाला।।
खिल उठा जग ये सारा।
कितना सुंदर देश हमारा।
कितना सुंदर देश हमारा।।

प्रीति, कला स्नातक द्वितीय वर्ष।

बाढ़ का मंजर

अच्छे खासे शहर देखते-देखते बन गए समंदर,
गिरते हुए पेड़ों और घरों में था न कोई अंतर
ऐसा था बाढ़ का मंजर।

जीवन भर की कमाई गई गाड़ी के साथ, शादियों की शहनाई गई
रसोई का खाना, जन्मों का खजाना गया
घरों में इकट्ठा था जंतर-मंतर
चला गया सब कुछ ऐसा था बाढ़ का मंजर
मां से बेटा बिछड़ते देखते-देखते लग गया ढेर शवों का देखते-देखते
सालों की जमा पूंजी वह गई देखते-देखते
बन गया शहर का समंदर
ऐसा था बाढ़ का मंजर

जल ने कहर बरपाया तो बरपाया
पहाड़ भी नीचे आकर जल में समाया
नदियों नालों ने तो ज़मीनी इलाके में समंदर बनाया,
उपर रहकर पहाड़ों ने भी लोगों
को नीचे आकर नदियों में मिलाया।
उपजाऊ धरती हो गई बंजर,
बगीचे हो गए जर्जर
ऐसा था बाढ़ का मंजर।

रवि शर्मा, कला स्नातक।

वर्ष 2023 में हिमाचल प्रदेश में प्रलय प्रचंड

हिमाचल प्रदेश भारत का सबसे सुंदर पहाड़ी राज्य है। हिमाचल प्रदेश से भारत की सुंदरता जगमगाती है। हिमाचल प्रदेश का गठन 15 अप्रैल 1948 को किया गया है। पहाड़ी क्षेत्रों की कई छोटी-बड़ी 31 रियासतों को मिलाकर हिमाचल प्रदेश को बनाया गया है। यहां की वादियां ठंडे इलाके तथा पहाड़ी इलाके इसके शोभा को बढ़ाते हैं। इस प्रदेश की जितनी तारीफ की जाए उतनी कम है।

हिमाचल प्रदेश के नदियों, नाले वन इसकी शोभा को बढ़ाते हैं। जब यह नदी नाले अपनी सीमा लांघ देते हैं तो यह मानव जीवन के लिए हानिकारक होते हुए वर्ष 2023 में 11 जुलाई को हिमाचल प्रदेश में बहने वाली ब्यास नदी ने अपनी सीमा को लांघ कर मानव जीवन को खतरे में डाल दिया। जहां 13 जुलाई 2023 तक कम-से-कम 88 मारे गए तथा 100 से अधिक घायल हो गए। इस बाढ़ का कारण अत्यधिक बारिश का होना, बादलों का फटना, वनों का अवैध कटान, विकास कार्य को सही तरह से नहीं करना। ब्यास नदी पर भीषण बाढ़ की वजह से 3 पुल गिर गए इसमें 50 साल पुराना औट पुल भी था। बाढ़ के पानी के आगे यह पुल कई घंटों तक टिका रहा।

लेकिन लोहे से बना यह पुल आखिर बाढ़ की रफतार को थाम नहीं पाया और लहरों के साथ बह गया। ब्यास, सतलुज, चिनाब, रावी, और यमुना उफान पर थी।

ब्यास नदी के आस-पास घनी आबादी होने के कारण कूल्लू और मनाली में तबाही हुई। यह समय के साथ प्रकृति के खिलवाड़ का नतीजा है। हिमाचल प्रदेश में 29 जगहों पर भूस्खलन हुआ। एक जगह बादल फटा, 24 जगहों पर बाढ़ आई, 825 सड़कों को नुकसान हुआ। बिजली की लाइनें खराब हो गईं। पानी की पाइप टूट गई थी। तेज़ बारिश के कारण पत्थरों के गिरने का खतरा बना हुआ था। मंडी जिले का ऐतिहासिक मंदिर पंचवक्त्र मंदिर डूबा हुआ था। बाढ़ से वचने के लिए हमें घरों के आस-पास नालियों की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। नदी नालों में पानी के बहाव को रोकना नहीं चाहिए। जिससे अत्यधिक बारिश होने पर बाढ़ का पानी नुकसान न कर पाए।

नदियों के आस-पास बांध बनाने चाहिए। पेड़ों को लगाना चाहिए। बांध के पानी को ऐसी नदी में डालना चाहिए। जो नियंत्रित रूप से बहती है। घरों को सुरक्षित स्थानों पर बनाना चाहिए। नदी नालों के आस-पास घरों को नहीं बनाना चाहिए। यदि बाढ़ आने की सम्भावना लगे तो सुरक्षित स्थानों पर जाना चाहिए। नदियों को प्रदुषण मुक्त रखने के लिए प्लास्टिक की थैलियां, बोटल और अन्य सामग्री को नदियों के किनारों पर नहीं फेंकना चाहिए। नदियों को



साफ रखना चाहिए।

छोड़ दो करना अब ये पाप, नदियों को करो साफ गंदे हो गए सारे नदी और नाल, अब बनो इनके रखवाले।

संगीता, कला स्नातक, द्वितीय वर्ष।

जिंदगी

कल एक झलक जिंदगी की देखा,
वो राहों पे मेरी गुनगुना रही थी,
फिर दूँदा उसे इधर-उधर
वो आंख मिचौली कर मुस्कुरा रही थी
एक अरसे के बाद आया मुझे करार,
वो सहला के मुझे सुला रही थी
हम दोनों क्यूं खफा है एक-दूसरे से
मैं उसे और वो मुझे समझा रही थी,
मैंने पूछ लिया-क्यों इतना दर्द दिया
कमबख्त तुने।
वो हंस कर बोली-मैं जिंदगी हूं पगली
तुझे जीना सिखा रही थी।

विपाशा ठाकुर, बीए तृतीय वर्ष।

देवभूमि की तबाही

माँ हिडिम्बा ने दिया संकेत
इंसानों को अगर दी गई ढिलाई
तो जीवन यापन में आएगी कठिनाई
देवभूमी देखेगी भयंकर तबाही

अपने गृहनिर्माण के लिए,
वनों को बर्बाद किया,
प्रकृति का किया हनन,
अपने घर को आबाद किया,
इस कारण फलस्वरूप,
ईश्वर ने हमें बर्बाद किया।

पर्यटन का केंद्र था कुल्लू-मनाली
दौर आया ऐसा घर-परिवार हो गए खाली
जब साधनों ने खाई स्वार्थ के लिए मार
लाजमी है प्रकृति तो होगी बीमार
अपने अहंकार के कारण
उजड़ गया घर-संसार खो गया परिवार।
देवभूमी को किया बीमार,
प्रकृति ने किया प्रहार।
इंसानों पर हुआ प्रहार, प्रकृति कर दी लाचार,
अब न लौटा पाएंगे परिवार
न मिल पाएगा बिछड़े हुए का प्यार,
अब करते हैं गलती का सुधार
करते हैं प्रकृति का उपचार,
संकल्प करें, होगा इन्सानियत का उद्धार
प्रकृति को दें ढिलाई, न होगी फिर तबाही
जन-जन को ये यह दवाई,
न होगी फिर तबाही।

रवि शर्मा, कला स्नातक।

न जाने क्यों?

न जाने क्यों?
खुद को विबरा हुआ महसूस करती हूँ।
न जाने क्यों?
इस दुनिया को समझने लगी हूँ
डर लगता है इस स्वार्थी दूनिया से
जो मेरे अपनों को मुझसे छीनना चाहती है।

न जाने क्यों?
डर जाती हूँ मैं उन लोगों से,
जिनकी नज़रे मेरी हार देखने के लिए बेताब
हैं।

न जाने क्यों?
अपने सपनों की उड़ान तो भरना चाहती हूँ
तभी यह कदम डगमगाने लगते हैं।
पर फिर उम्मीद के सहारे
जो मेरे अपनों ने मुझसे लगा रखी है
खुद को पत्थर बना कर
हर मुश्किल से निपट लेती हूँ।

न जाने क्यों?
पागल बनी फिरती रहती हूँ
अपने पापा के लिए
पापा कहते हैं बड़ा नाम करेगा
बेटा हमारा, ऐसा काम करेगा,
कुछ ऐसा उनके मुख से सुनना चाहती हूँ
मैं बेटी होकर
बेटे होने का फर्ज निभाना चाहती हूँ।

न जाने क्यों?
दूसरों को खुश रखते-रखते

खुद अकेले पड़ जाती हूँ।
चोट लग जाती है हर बार मुझे,
पर दोस्तों का हाथ थाम लेती हूँ।

न जाने क्यों?
गिरना, खुद फिर संभलना
कैसे सीख चुकी हूँ?
इतनी बड़ी हो चुकी हूँ।

न जाने क्यों?
ये दूनिया बोझ लगने लगती है
फिर से वही उलझन
वही बातें याद आने लगती है।
न जाने क्यों?
आंखों से आंसू छलक जाते हैं,
पर अपनों की नज़र का जब ध्यान आता है,
फिर न जाने क्यों?
उन आंसुओं की एक सुंदर मुस्कान बन जाती
है।

न जाने क्यों?
उम्मीद लगाए रखते हैं सब मुझसे,
डर जाती हूँ अपने डगमगाते
कदमों को देखते हुए।

न जाने क्यों?
मुझे समझ पाना आसान नहीं
अपनी छोटी-छोटी खुशियों के सामने अक्सर
अपनी ख्वाहिशें समेट लिया करती हूँ,
न जाने क्यों?

**शिवानी, वाणिज्य स्नातक,
तृतीय वर्ष।**



मित्रता

मित्रता जीवन में केवल मात्र हाथ मिलाने, बात करने या साथ में बैठने से नहीं होती। मित्रता एक निःस्वार्थ भाव है, जो व्यक्तियों को भावात्मक रूप से जोड़ती है। मित्रता से केवल एक ही नहीं अपितु एक शुभचिंतक भी मिलता है। यदि कोई आपका शुभचिंतक नहीं है तो वह आपका वास्तविक मित्र नहीं है। यदि फिर वह व्यक्ति जो आपका शुभचिंतक है परंतु आपका मित्र नहीं है तो वह व्यक्ति केवल अपने नीजि स्वार्थ के लिए आपसे जुड़ा है और नीजि स्वार्थ एक ऐसा तत्व है जो मित्रता को समाप्त करने का साहस रखता है।

शिवानी, वाणिज्य स्नातक, तृतीय वर्ष।

काल की पुकार

हे मानव! सुन लो मेरी यह पुकार
मत कर प्रकृति पर प्रहार
सहेज कर रखले इसे,
अपने आने वाले कल के लिए
प्रकृति ही इस जग की शक्ति है,
शक्ति है यह सृष्टि
सृष्टि में ही जीवन है
जीवन में ही भावनाएं हैं।
हे मानव! सुन लो मेरी पुकार
मत कर प्रकृति पर प्रहार।।
मत कर प्रकृति पर प्रहार
जब यह अपना रूप बिगाड़ेगी
मच जाएगा हाहाकार
खेत, खलियान, पर्वत, नदी मां, पठार
यह तेरे जीवन के हैं आभार
पुरखों ने इन्हें देव माना
इनकी पूजा करना जीवन में ठाना
मत कर तरुओं का कतान
सेहनी पड़ेगी इसकी मार
नष्ट कर मत उजाड़ो
इन पखेरुओं के प्राण।।
प्रकृति सबकी जीवन दाता है
सबकी भाग्य विधाता है
अब उठाया ना जाएगा मेरे पापों का बीड़ा
समझ प्रकृति की पीड़ा।
हे मानव! सुन ले मेरी यह पुकार
मत कर प्रकृति पर प्रहार
यही है सबकी गुहार
यही “काल की पुकार”।।

दिव्या शर्मा

पर्यावरण

क्यों न सहेज कर रख लें
इस प्रकृति को, आने वाले कल के लिए
आने वाले अपनों के लिए
ये सुखती नदियां / ये सिमटते पर्वत
एक रोज यूं ही खत्म हो जाएंगे
आज हम कुछ कर सकते हैं
इस रोती हुई प्रकृति के सारे आंसु सूख जाएंगे
पर आंसू होंगे हमारी आंखों में जिसे चाह कर भी
हम पोंछ नहीं पाएंगे
हम पुकारेंगे प्रकृति को अपनी मदद के लिए
पर
मौत की खामोशी ओढ़े
वो बेजान पड़ी बस यूं ही देखती रहेगी।
हर्ष, बीए तृतीय वर्ष।

आजादी

पंछी है कैद अगर
तो उड़ने में मदद कर तू।
रात है काली अगर
दिया जला कर रौशन कर तू
बीत गए कई साल रुढ़िवादी विचारों में उलझ
कर
सुलझा मन के भाव तू।
तोड़ दे दीवारें सारी,
आगे बढ़ विजय राह पर,
उन वीरों ने क्या पाया,
अगर तू अब भी डर में खोया।
उठ जा तू, छू ले आसमान,
आजादी पे है सबका हक।
विपाशा ठाकुर, बीए तृतीय वर्ष।

ये बाढ़ भी कैसी आई है

ये बाढ़ भी कैसी आई है
चारों ओर तबाही है।
ये मुसीबत भी कैसी आई है।
इस समय ना यार ना कोई भाई है।
ये बाढ़ भी कैसी आई है।

मनाली आधा डूब गया शिमला धरती में गुंध गया
भूंतर पानी में घूल गया सैंज तो आधा भी ना बचा
नदियों के तांडव में सब डूब गया
ये दिलों में सबके खौफ लाई है
ये बाढ़ भी कैसी आई है।

रोड़ भी सारे टूट गए
मंजिल से भी सब छूट गए
लगता अब भगवान भी हमसे रूठ गए
कुछ क्षणों में हमसे ब टूट गए
मौत भी अनेकों को आई है
ये बाढ़ भी कैसी आई है।
घर कईयों के डूब गए
देवो के आगे भूल गए
पर बाढ़ काल बनकर आई है
ये बाढ़ भी कैसी आई है।

बेसहारा पशु मौत की भीड़ में शामिल हो गए
हिमाचल ने ऐसा काला आसमां देखा की
गांव नदियों में शामिल हो गए
ये बाढ़ स्वयं शिव तांडव करती आई है
ये बाढ़ भी कैसी आई है।

मानों या ना मानो पर इंसानियत की
करतूत ही हमें इस मोड़ पर लाई है।
ये तांडव बनकर आई है
ये तांडव बनकर आई है।

आशुतोष, बीए प्रथम वर्ष।

बारिश सम्बद्ध कहावतें

1. छता पाणिए, टिपु—टिपु रे छाले
बौता भीगे बातणु, बौणे फुआले—गुआले।
2. छातिए शौहिए, छुटा पाणी रा छाला,
तेरा सुत दशाला।
3. द्रेहड़ दर ता गाशा नेड़
द्रेहड़ नेडे ता गाशा दूर।
अर्थ—द्रेहड़ कुल्लवी भाषा का शब्द है जिसका
मतलब होता है एक वृत्। जब बादल पतला
होता है तो सूर्य अथावा चांद के आस—पास
एक वृत् बनता है उसे द्रेहड़ कहते हैं जिसमें

बारिश का पता चलता है।

4. सरग लाल हुआ दोती
होल—जूं डाहणे कोती।
सरग लाल हुआ उडे
हौल जुं डाहणे खुण्डे

सरग लाल हुआ सान्हा
हौल जूं डाहणा कान्हा।

अर्थ: हौल—जूं डाहणे कोती का अर्थ है कि
बारिश कुछ दिनों में होगी तो हल और जुगड़े

तैयार करके रखो।

5. हौल—जूं डाहणे खुण्डे—इसका अर्थ
है कि वर्षा नहीं होगी हल जुगड़ें संभाल
कर रखो।
हौल जूं डाहणे कान्हा— इसका मतलब
है कि बारिश आने वाली है हल और
जुगड़े लेकर खेत की ओर चलो।

रवि शर्मा,

कला स्नातक, प्रथम वर्ष।

संस्मरण

जुलाई—अगस्त 2023 में हुई बारिश पहले मुझे सामान्य लग रही थी परंतु फोन पर ऑट पुल के बहने की खबर तथा अन्य स्थानों में बाढ़ और भूस्खलन की खबरें सुनकर मैं घबरा गई थी। मेरे ताया जी की बेटी का घर सैंज में है तो सभी सैंज की हालत के बारे में सुनकर बहुत परेशान हो गए थे। ताया जी ने दीदी को फोन करके उनका हाल-चाल पूछा। अत्यधिक बारिश होने के कारण बिजली के खंभे गिर गए थे। तथा बिजली भी चली गई थी। मैं बहुत घबरा गई थी। थोड़ी ही देर बाद मोबाइल का नेटवर्क भी चला गया था। उसके बाद सभी के मोबाइल बंद हो गए थे।

किसी को अपने आस-पास की कोई भी जानकारी नहीं थी। मेरा घर ऊंचाई पर है इसलिए वहां से भुंतर से लेकर पनारसा तक का क्षेत्र पूरा दिखाई देता है। मैं अपने घर से नदी का रौद्र रूप देख रही थी तथा नदी किस तरह अपना क्षेत्र विस्तार कर रही थी, यह मुझे साफ दिख रहा था। देखते-ही-देखते एक बड़ा भू-भाग नदी में जलमग्न हो गया था। पूरे दिनभर चिंता हो रही थी कि अभी और क्या-क्या देखने को मिलेगा। गांवों में अक्सर ऐसा होता है कि अगर बारिश लगी हो तो लोग एक-दूसरे के घर बातें करने चले जाते हैं तो हमारे घर पर भी गांव के कुछ लोग आए थे और उनका कहना था कि यह देवता का प्रकोप है। इस धरती पर पाप बढ़ रहे हैं तो देवता उन्हें सजा दे रहे हैं। मेरे गांव में कुबेर देवता का एक छोटा सा मंदिर है और मंदिर के बाहर से पानी की एक छोटी सी झील है जो प्राकृतिक है, उसे हम कुफरी कहते हैं।

मान्यता यह है कि चाहे कितनी ही बारिश क्यों न हो परंतु पानी कभी भी देवता के मंदिर की दहलीज़ तक नहीं पहुंचता है। पानी मंदिर की दहलीज़ पर पहुंचते ही रुक जाता है। मैंने कभी भी इतनी भयानक बारिश नहीं देखी थी। इसलिए मैं और मेरी बहनें बार-बार मंदिर में देखने जा रहे थे कि पानी दहलीज़ पर पहुंचा या नहीं।

दो दिन की लगातार बारिश के बाद सभी ने राहत की सांस ली तथा प्रभु का धन्यवाद किया। बारिश के रुकने के बाद मैं फिर मंदिर के पास गई और देखा कि पानी मंदिर की दहलीज़ को पार नहीं कर पाया है। यह देखकर मुझे बहुत हैरानी भी हुई। बारिश के थमने के बाद सभी गांववासी अपने-अपने खेतों तथा बगीचों की हालत देखने पहुंचे तो उन्होंने देखा कि उनके बच्चों की तरह पाले हुए पेड़ गिर चुके हैं। मैं और मेरे ताया जी की बेटी भी बगीचे देखने निकल पड़ी थी। बारिश के कारण दिन-भर घर में बैठे-बैठे घूटन सी हो गई थी। हमने अपनी आंखों के सामने ही सेब के पेड़ों को गिरते हुए देखा। यह दृश्य बहुत भयानक था। बगीचा ताया जी का था इसलिए हम दोनों ज़्यादा न सोचते हुए घर की तरफ भागीं और उन्हें सब कुछ बता दिया।

जैसे ही उन्होंने यह सुना उनके चेहरे का रंग उड़ गया और सभी बगीचे की तरफ चल पड़े। देखते ही देखते बहुत सारे पेड़ गिर गए थे। पेड़ तो टूट ही गए थे परंतु साथ ही बहुत सारे सेब गिर गए थे। इस नुकसान को देखकर हमें ही इतना दुःख हो रहा था तो बड़ों को कितना दुःख हो रहा होगा, यह मैं बयान नहीं कर सकती। पेड़ों को बच्चों

की तरह पालकर बड़ा किया जाता है और इस तरह उन्हें अपनी आंखों के सामने गिरते देखकर बहुत दुःख हुआ। गांव वाले मिलकर तायाजी को सांत्वना दे रहे थे, परंतु मन ही मन सभी दुःखी थे। खेतों की हालत तो बहुत ही खराब थी। सीड़ीदार खेत होने के कारण एक खेत दूसरे खेत में तथा दूसरा खेत तीसरे खेत में गिर गया था। खेतों में पांव रखने के लिए भी नहीं था। फसलें खेतों में ही सड़ चुकी थीं। सड़कों की हालत तो देखने लायक भी नहीं थी। हमारे गांव का लिंक रोड़ इतनी बुरी तरह से टूट चुका था कि वह बनने की हालत में नहीं था। गांव में सभी को बहुत नुकसान से गुज़रना पड़ा था। अब धीरे-धीरे आस-पास से सूचनाएं मिलनी शुरू हो गई थी। किसी ने अपने भाई को तो किसी ने अपनी बहन को खो दिया था। किसी की मां, किसी का बेटा घरों के ढहने के कारण दुनिया को अलविदा कह चुके थे। यह खबरें सुनकर हम सभी के रोंगटे खड़े हो गए थे।

प्रकृति के इस प्रकोप से समाज का बहुत बड़ा वर्ग प्रभावित हो गया था। सरकार भी इस प्रकोप से बड़ी बुरी तरह प्रभावित हुई। भारी बारिश के कारण राहत कार्यों में भी देरी हो रही थी। बारिश के थमने के बाद धीरे-धीरे जिंदगी सामान्य होने लगी थी। प्रकृति द्वारा दिए जख्मों से लोग उबर तो गए, लेकिन जिन लोगों ने अपनों को खोया, उनकी जिंदगी में खौफनाक सूनापन रह गया है। इतनी भयानक बारिश मैंने अपनी जिंदगी में नहीं देखी थी।

मधु,
बीए द्वितीय वर्ष।

संस्मरण

दिन 6 जुलाई का था। उस दिन जैसे ही मैं सो के उठी तो बाहर बारिश लगी हुई थी। बारिश लगातार दो दिन से हो रही थी। बारिश के कारण हमारी सड़के बंद हो गई थी। उस कारण घर के सारे सदस्य घर पर थे। घरों में लाइट चली गई थी। फोन में नेटवर्क नहीं था और उस दिन जब मैं बाहर निकली और जब मैंने बाहर का दृश्य देखा तो मैं हैरान हो गई थी। मेरे घर से ब्यास नदी बहती हुई दिखती है मैं उसे हर रोज़ देखती हूँ वह रोज़ मुझे शांत और एक पतली धारा में बहती हुई मुझे दिखाई देती थी। लेकिन उस दिन ब्यास नदी ने भयानक रूप धारण कर लिया था। नदी का पानी काला हो गया था। सभी को पहले यह सामान्य लग रहा था। परंतु बारिश लगातार हो रही थी। ब्यास नदी का पानी अब बहुत अधिक बढ़ रहा था। जैसे मानों नदी ने विकराल रूप धारण कर लिया था।

मैं उस दृश्य को देख रही थी। तो मेरे हृदय में डर जैसा बैठ गया था। कि कुछ अनहोनी ना हो जाए। जब मैंने नदी को बहते हुए देखा तो नदी अपने जल क्षेत्र से अधिक बढ़ गई थी। हमारा बाजार नदी के किनारे है। नदी के किनारे पुलिस चौकी भी है। पुलिस चौकी के बाहर बहुत सी कारें, ट्रक थी। जिनका एक्सीडेंट हुआ था। उनमें से कुछ नई कारें थी। वो एक-एक करके हमारी आंखों के सामने ब्यास नदी अपने साथ ले गयी।

नदी के बढ़ते हुए प्रवाह को देखते हुए शायद उस पुलिस चौकी में कोई भी पुलिस कर्मी नहीं थे। पुलिस चौकी के साथ मंदिर बना हुआ था और सब का मानना था कि देवता पानी को ऊपर बढ़ने नहीं देगा। देवता पानी को रोक लेगा। परंतु ब्यास नदी ने भी रौद्र रूप धारण कर लिया था और नदी का पानी मंदिर को अपने साथ बहा के ले गयी। हमारी सांसे अब थम सी गई थी। हमारा पूरा परिवार इस दृश्य को देख रहा

था। पहले तो हम देवता के भरोसे थे कि पानी नहीं आएगा। परंतु जब वह मंदिर तक आ गया तो फिर हमें डर था कि पानी अब और ज्यादा ना बढ़े अगर पानी थोड़ा और बढ़ जाता तो वह सड़क के साथ लगी हुई दुकाने उनमें से एक हमारी दुकान भी थी। जिससे हमारे पूरे परिवार का पालन पोषण होता था। वह भी चली जाती।

घर के सभी सदस्य चिंता में थे और सभी परेशान थे। हम उस समय असहाय महसूस कर रहे थे। क्योंकि सड़क सभी बंद थी। कोई कहीं जा नहीं सकता नदी का ऐसा रूप देखकर ऐसा लग रहा था कि वह अपने साथ ब्यास नदी पर बना हुआ पुल (सेतु) को भी अपने साथ बहा के ले जाएगी। उस समय जब मैंने अपने पिता और माता को देखा तो उनके आंखों में तो आंसु ही आ रहे थे। पिता जी को बहुत चिंता हो रही थी। क्योंकि वह दुकान हमारी कमाई का एकमात्र साधन थी और सभी भगवान से प्रार्थना कर रहे थे। कि ब्यास नदी के पानी को देख रहे थे। नदी के किनारे मेरे विद्यालय में पढ़ी हुई लड़की का घर भी था और नदी उनके घर के अंदर पहुंच गयी थी। उनके घर की निचली मंजिल पूरी तरह से डूब गयी थी। हमें उनकी चिंता भी हो रही थी हम कुछ कर नहीं पा रहे थे।

उस समय फोन में किसी के नेटवर्क नहीं था। तो किसी के संपर्क भी नहीं हो पा रहा था। नदी के किनारे मेरा विद्यालय भी था। जहां मैं छठी से लेकर 12वीं तक पढ़ी हूँ। उस विद्यालय में भी पानी पहुंच गया। मेरे विद्यालय का आंगन जहां हम खेलते थे। उसे भी अपने साथ ले गयी। हमारे विद्यालय के रसोईघर, शौचालय पेड़-पौधे सब कुछ नदी अपने साथ ले गई। ये सब हमारे आंखों के सामने हो रहा था। सब परेशान थे और सब यह देख रहे थे कि कब नदी शांत होगी। भगवान की कृपा से शाम के 6 बजे नदी का जल प्रवाह थोड़ा कम हो गया था। परंतु सभी को यह चिंता थी कि नदी फिर से ऐसा रूप धारण न करे। सभी सोच रहे थे।

आगे कुछ और अनहोनी ना हो। और अगले दिन जब मैं उठी तो बारिश रूक गयी थी। और जब मैंने बाहर बाजार का दृश्य देखा तो वह बिल्कुल बदल गया था। बाजार की पूरी रूप रेखा ही बदल गई थी। नदी का किनारा बहुत डरावना लग रहा था। वहां बड़े-बड़े पत्थर ही दिखाई दे रहे थे। और नदी अब शांत सी हो गई थी। मैंने अपनी जीवन में पहली बार ऐसी बारिश देखी और इस बारिश ने बहुत ज्यादा नुकसान कर दिया था। मेरे घर के सामने वाले गांव(थलौट) वहां सड़क निकलने के कारण भूस्खलन हो रहा था और वहां की ज़मीन नीचे धंस रही थी। वह गांव भी खतरे से जूझ रहा था। उस गांव में मारकंडे ऋषि का मंदिर है। उस मंदिर में भी दरारे आ गयी थी। उस गांव में जितने भी घर थे उनमें सभी में दरारे आ गयी थी। वहां के सभी लोग परेशान थे। मंदिर से देवता को निकाल कर सुरक्षित स्थान पर ले जा गया। वहां के लोग अब बहुत डर गए थे। जब वहां से देवता को ले जाया गया तो सब का मानना था कि वह गांव अब नहीं बच पाएगा। जब तक गांव में देवता था तो लोगों को विश्वास था कि हम सब सुरक्षित हैं। देवता गांव को कुछ नहीं होने देगा। परंतु देवता को ले जाने के बाद वहां के लोग दुःखी व निराश हो गए।

फिर उनके मन में ज्यादा डर बैठ गया कि अब उनके गांव को कौन बचाएगा। सब को अपने घरों की चिंता थी कि वह बच पाएंगे कि नहीं। सभी ने अपने घर खाली कर दिये थे। और सारे बाजार में रहने के लिए आ गए थे। अपने जीवन में जो धन कमा कर पाई-पाई जोड़कर जो घर बनाए थे उन्हें वह अब छोड़ने पड़ रहे थे। सभी की आंखें नम थी। बुजुर्ग रो रहे थे आज तक मैंने कभी भी ऐसा होते हुए नहीं देखा था। उस समय उनकी स्थिति बहुत असहाय थी।

सविता,
बीए तृतीय वर्ष।

बाढ़

जैसा कि सभी इस बात से अवगत है कि वर्ष 2023 में हिमाचल प्रदेश को मौसम के बदलाव के कारण बहुत सी कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है। वर्ष 2023 में मौसम ने हिमाचल प्रदेश को अपना विकराल रूप दिखाया है। जिस कारण प्रत्येक हिमाचल वासी के मन को खोने का डर भी बैठ गया था।

लगातार हुई मूसलाधार बारिश के कारण लोगों को अनेक कठिनाईयों का व परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। लगातार बारिश के कारण नदियों में पानी का बहाव अधिक तेज़ हो गया था। नदियों में पानी का बहाव अधिक तेज़ हो गया था। नदियों का जलस्तर बढ़ गया था। जिस कारण लोगों को उन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी। कई लोगों के घरों में पानी भर गया व लोगों के घरों की नींव कच्ची हो गई जिस कारण कई मकान नदी में खिलौने की तरह बह गए। अर्थात् कई लोग घरों से बेघर हो गए। व लोगों ने अपने जीवन में परिश्रम से जिस घर को बनाया तबाह हो गए। मकान के साथ-साथ बहुत से लोगों की जानें भी इस मूसलाधार बारिश ने ले ली व घरों को विरान कर दिया था।

बहुत से पीड़ित लोगों का कहना था कि हमने अपनी मेहनत की सारी कमाई खो दी है, जो हमने अपने घरों को बनाने में लगाई थी। उनकी सारी संपत्ति बह गई है। नदी के समीप मकानों को इस बारिश के कारण अधिक खतरा था क्योंकि इस पानी के कारण नदियों का जलस्तर लगातार बढ़ता दिखाई दे रहा था। नदियों के समीप मकानों में पानी अंदर तक जा रहा था। वे मकान पानी में खिलौनों की भांति बहते चले जा रहे थे।

नदी में बाढ़ को देखते हुए स्थानीय प्रशासन ने नदियों के आस-पास के सभी मकानों को खाली करने के आदेश जारी कर दिए थे व निवासी या तो अस्थायी रूप से विभिन्न क्षेत्रों में स्थानांतरित हो गए थे या वे अपने-अपने रिश्तेदारों के यहां आश्रय मांग रहे थे व कई लोगों ने स्थानीय प्रशासन द्वारा

बनाए गए अस्थायी आश्रयों में शरण ली थी व कुछ लोगों ने अपने पड़सियों के घरों में आश्रय लिया था।

खराब मौसम व मूसलाधार बारिश के कारण हिमाचल में आए हुए कई सैकड़ों पर्यटक भी विभिन्न स्थानों में फंस कर रह गए थे। व बहुत से पर्यटकों को अपनी छुट्टियां कम करने व होटलों में की गई अपनी बुकिंग को रद्द करना पड़ा था।

लगभग 200 पर्यटक लाहौल और स्पीति जिले के चंद्रताल क्षेत्र में फंसे हुए थे जबकि इतनी ही संख्या में पर्यटक किन्नौर जिले के पागल नाला और तेलगी नाला के क्षेत्रों में फंसे हुए थे।

लगातार बारिश के कारण लोगों का संपर्क एक-दूसरे से पूर्णतः टूट गया था व उनके लिए अपने रिश्तेदारों से संपर्क करना मुश्किल हो गया था। क्योंकि बहुत से क्षेत्रों में नेटवर्क काम नहीं कर रहा था। इसके अलावा बिजली कटौती के कारण लोगों का अपने मोबाईल उपकरणों को चार्ज करना असंभव हो गया था।

लगातार बारिश और बादल फटने की घटनाओं से जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ था।

इस वर्ष हिमाचल प्रदेश में भारी बारिश के कई रिकॉर्ड टूट गए हैं। मौसम विभाग के अनुसार पिछले 122 वर्षों में दूसरी बार सबसे अधिक वर्षा देखी गई है। विभाग के 1901 से 2023 तक के डाटा के अनुसार 1949 में जुलाई माह में सबसे अधिक 558 एमएम बारिश दर्ज की गई थी और इसके बाद 2023 में 437 एमएम बारिश दर्ज की गई है।

सरकार का कहना था कि इस साल मानसून के दौरान भारी बारिश के कारण जानमाल की भारी तबाही हुई है। कई लोगों की जाने गई है। व साथ ही सार्वजनिक और नीजि संपत्ति को भी बड़ा नुकसान हुआ है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक इस साल अब तक बारिश और बाढ़ से जुड़े हादसों में कम से कम 217 लोगों की मौत हुई है व ग्यारह हज़ार से ज़्यादा घरों और करोड़ों की संपत्ति का नुकसान हुआ है। बारिश और बाढ़ के कारण हुई तबाही को देखते हुए सरकार ने पूरे राज्य को प्राकृतिक

आपदा प्रभावित क्षेत्र घोषित कर दिया था। सरकार ने लोगों की सहायता करने के लिए कई कदम उठाए। जिनके मकान इस बारिश के कारण तबाह हुए उन्हें सरकार द्वारा राहत कोष प्रदान किया गया। सुखविंदर जी हिमाचल के मुख्यमंत्री बारिश के समाप्त होने व शांत होने पर क्षतिग्रस्त स्थानों पर गए व लोगों से मिले उनकी परेशानियां सुनी व उनकी सहायता करने का वाद किया व साथ ही उन्हें सांत्वना दी।

इस बारिश के कारण लोगों के कई कारोबार भी समाप्त हो गए व रोजगार समाप्त हो गए। किसानों की फसल समाप्त हो गई व खराब हो गई। कुछ पैदावार होने पर भी उन्हें मंडियों तक पहुंचाना मुश्किल हो गया था क्योंकि बारिश के कारण सड़कों को भी भारी क्षति पहुंची थी। वाहनों का आना-जाना बंद हो गया था। स्थान-स्थान पर मलबे गिरे हुए थे व पहाड़ों की मिट्टी सड़कों पर पहुंच गई थी।

कुछ लोगों का कहना था कि पहाड़ों से जो मिट्टी के मलबे सड़कों पर आ रहे हैं वह पहाड़ों के काटने व उनकी खुदाई के कारण हुआ है। हमें प्रकृति से खिलावाड़ नहीं करना चाहिए इससे नुकसान मानव जीवन को ही है। इस वर्ष ने मानव जीवन के साथ-साथ पशु-पक्षियों के जीवन को भी प्रभावित किया है। उनके जीवन को भी भारी मात्रा में क्षति हुई है।

अतः वर्ष 2023 में हिमाचल प्रदेश को अकल्पनय दृश्य देखने के लिए मिले व लोगों को कठिन से कठिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ा कुछ लोगों को अपना जीवन प्रारंभ से प्रारंभ करना पड़ा। बहुत से लोगों ने अपने परिवार के सदस्यों को खोया। कुछ के रोजगार व कारोबार समाप्त हो गए। इन सभी परिस्थितियों की आने की हिमाचल वासियों ने कल्पना भी नहीं की थी।

अर्थात् मानव की हर परिस्थिति के लिए तैयार रहना चाहिए व प्रकृति के साथ विकास के नाम पर किसी भी प्रकार का कोई खिलावाड़ नहीं करना चाहिए। क्योंकि इससे मानव जीवन को ही खतरा है व साथ ही कठिन समय आने पर हमें सकता दिखाकर सभी की सहायता करनी चाहिए।

अनीता।

बाढ़ का आंखों देखा हाल

हिमाचल में एक ऐसा मंजर भी आया, एक ऐसा समय भी आया जैसा कभी किसी ने सोचा न था। हिमाचल प्रदेश देवों की भूमि कहा जाने वाला यह प्रदेश अपने सुंदर पर्यावरण एवं सुंदर खुबसूरत वादियों से परिपूर्ण यह प्रदेश पर्यटन की दृष्टि से सम्पूर्ण भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व में सुविख्यात है।

मैं 'रवि शर्मा' हिमाचल प्रदेश के जिला कुल्लू का निवासी आप सभी से हिमाचल से आई आपदा का आंखों देखा हाल ब्यान करूंगा।

वो दिन था 8 जुलाई 2023 का, यू तो मैंने आज तक बारिश का ऐसा भयानक मंजर कभी नहीं देखा। जुलाई महीने के शुरू होते ही बारिश दिन-रात अपना प्रचंड रूप लेती रही 8 जुलाई 2023 को पहली बार ब्यास नदी का जलस्तर खतरे की रेखा से काफी ऊपर चल रहा है। एवं बाढ़ जैसे हालात बन गए हैं।

उसी दिन बारिश बिना रुके चलती जा रही थी एवं टीवी मोबाईल के जरीए हमें पता चल रहा था कि कुल्लू में ही पड़ने वाले

भूंतर इलाके का पुराना पुल आधा वह गया। पानी बरस रहा था और हमें डर सता रहा था कि कल हो ना हो। किसी स्थान पर 20 मीटरें हुई, किसी स्थान पर घर गिर गए कहीं होटल हमारे हिमाचल की पर्यटन नगरी कही जाने वाली मनाली पूरी वह गई हमारे इन खबरों को सुनकर रोंगटे खड़े हो रहे थे। हमारा घर ब्यास नदी के किनारे था 11 तारीख तक पानी हमारे घर के महज 20 मीटर की दूरी तक पहुंच गया।

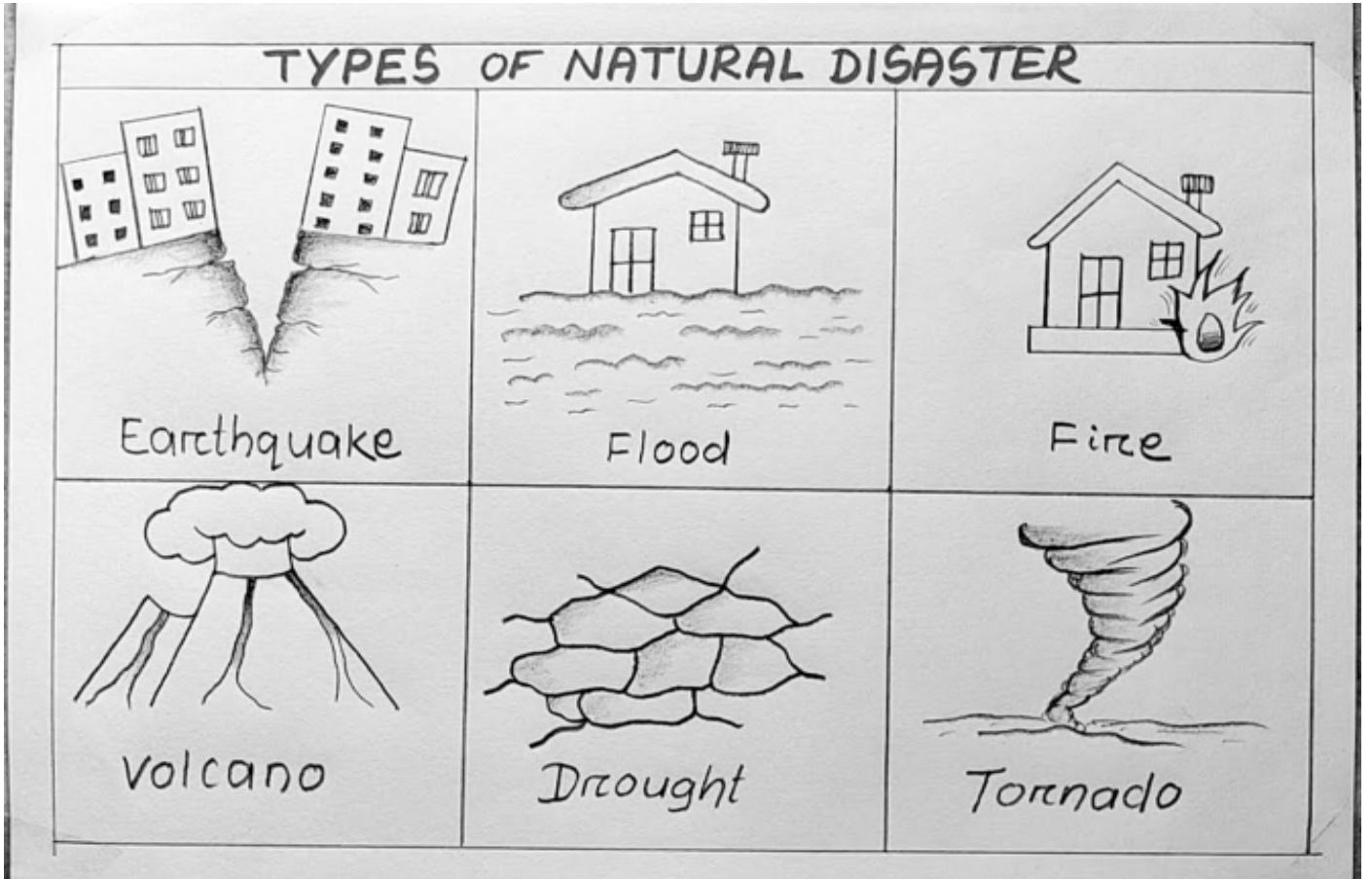
हमारे गांव में अफरा-तफरी मच गई। बुजुर्गों को संभालने में कीमती चीजों के रखरखाव में हम डरते जा रहे थे। वही थोड़ा दूर लगभग 50 मीटर की दूरी पर एक बुजुर्ग दम्पती जिन के पुत्र की मृत्यु को महज 7 महीने हुए थे उनके घर का एक हिस्सा वह गया ओर एक ही कमरा रहा गया।

वह अपना गुज़ारा एक करियाने की दुकान से करते थे जो कि अब वह चुकी थी। मुझे यह सब देखकर अत्यंत दुःख हुआ। मैंने उनसे आग्रह किया कि वह हमारे निवास

स्थान में रुके परंतु श्री दुगले राम जी जो कि भूतपूर्व सैनिक थे। उनके स्वाभिमानी किरदार के चलते उन्हें स्वीकार न था। उनका कथन था कि जब तक मेरे हाथ पैर सलामत हैं मैं किसी पर बोझ नहीं बनूंगा। मुझे माफ करना बेटा मैं तुम्हारे पास नहीं रुक सकता मैं तुम्हारी भावनाओं की कद्र करता हूं परंतु मैं तुम्हारा आग्रह स्वीकार नहीं करूंगा, हां हो सके तो कुछ जरूरत का सामान भिजवा देना। इसी बात के साथ मैं अपने घर आया एवं अपने घर से कुछ जरूरत का सामान जैसे कंबल खाद्य वस्तुएं उन तक पहुंचवाई और मैं वापिस आया। वो मंजर जहां मौत का तांडव हो रहा है यह जीवनपर्यंत मुझे याद रहेगा पुरी व्यथा इस संस्करण में कहना कठिन है पर यह आपदा एक प्रलय का ही रूप था जा कि हमारे देवी-देवताओं की कृपा से टल गया।

हम आशा एवं ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि ऐसा समय दोबारा न आए।

रवि शर्मा, बीए प्रथम वर्ष।



संघर्ष ही जीवन है

जब मैंने ग्याहरवीं कक्षा में प्रवेश किया तो मेरा एक ही सपना था कि मैं कब कॉलेज में प्रवेश करूंगी। इसलिए मैं अपनी पढ़ाई में इतनी डूब गई कि मुझे पता ही नहीं चला कि कब मेरी बारहवीं हो गई और मैं कॉलेज में प्रवेश कर गई। जिस वर्ष मैंने राजकीय महाविद्यालय पनारसा में प्रवेश किया। उस दिन मैं बहुत खुश हुई कि मेरा कॉलेज जाने का सपना पूरा हो गया। अब मैंने अपना अगला सपना देखना शुरू किया और कॉलेज के साथ-साथ उसके लिए भी मेहनत करना शुरू किया।

मैं अपने माता-पिता की बहुत आभारी हूँ जिन्होंने जो खुद ज्यादा पढ़े-लिखे ना होकर भी मुझे इतना पढ़ाया कि मैं अपना निर्णय स्वयं ले सकूँ। पैसों की कमी होते हुए भी मुझे कभी कमी महसूस नहीं होने दी। मुझे इतना काबिल बनाया कि मैं अपनी आगे की पढ़ाई के बारे में कुछ सोच सकूँ। मेरे माता-पिता का यह संघर्ष ही तो मेरे लिए प्रेरणास्त्रोत है, जिस कारण मैं भी अपने जीवन में कुछ करने के लिए प्रेरित हुई हूँ। कॉलेज के इन तीन सालों ने मुझे बहुत कुछ सिखाया जो कभी मुझे कोई और नहीं सिखा सकता। कॉलेज के दिनों में मैंने जब पुस्तकालय जाना शुरू किया तो वहीं पर ही मैंने जीवन का सही अर्थ जाना है अर्थात् प्रत्येक मनुष्य का जन्म संसार में एक विशेष भूमिका निभाने के लिए हुआ है और वहीं पर ही मैंने अपने गुणों को परखा है कि मैं अपने जीवन में क्या कर सकती हूँ और क्या नहीं। मेरे संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास में कॉलेज का महत्वपूर्ण योगदान है। मेरे प्रध्यापकों ने भी मुझे हर कदम पर मोटिवेट किया है। मेरे सीनियरों के साथ-साथ जूनियरों का भी मुझे बहुत सहयोग मिला है। वे हर बार मुझे जाने अनजाने में मोटिवेट किया करते थे। मेरी क्लास के विद्यार्थियों ने भी बहुत प्यार और सहयोग दिया।

राजकीय महाविद्यालय पनारसा में मुझे नए-नए प्राध्यपकों से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ जिनसे मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। जब भी मुझे कुछ समझ नहीं आता था तो ना केवल मेरे विषय के प्रध्यापक ने ही मेरी सहायता की, बल्कि दूसरे विषय के प्रध्यापकों ने भी मेरी सहायता

की है। अतः मैं इस प्यार एवं सम्मान के लिए इस महाविद्यालय की जीवन पर्यन्त आभारी रहूंगी।

मैं अपने छोटे भाई बहनों के लिए यही कहना चाहती हूँ कि आप शिक्षा के महत्व को समझें और अपने लिए खुद स्टैंड लेना शुरू करें। अपना लक्ष्य निर्धारित कर उसके लिए अभी से ही मेहनत करना शुरू करें क्योंकि यदि हमें ऊंचाईयों पर जाना है और अपनी मंजिल को पाना है, तो हमें कंटिले रास्तों पर चलना ही होगा। यह आवश्यक नहीं है कि हमें एक बार में ही सफलता मिल जाएगी। अगर अपनी मंजिल को पाना है, तो हमें असफल होने के बाद भी एक नए अनुभव के साथ निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। क्योंकि किस्मत से जिंदगी बदलती है या नहीं मुझे नहीं पता, लेकिन मेहनत से जिंदगी को जरूर बदला जा सकता है।”

मेरी इन सभी बातों को बताने का केवल एक ही उद्देश्य है कि आप अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए जल्दी से जल्दी प्रयास करें। किसी भी दूसरे व्यक्ति के ऊपर निर्भर ना रहें, आत्मनिर्भर बन अपने माता-पिता, महाविद्यालय और अपने प्रदेश का नाम ऊंचाईयों तक ले जाएं। मैं चाहती हूँ जो बातें मुझे देर से पता लगी है, वह आप को जल्दी पता लगे। ताकि आप सभी इन बातों पर विचार करें और अपने जीवन को और भी बेहतर बना सकें। क्योंकि मेरी जिंदगी में बहुत सी मुश्किलें भी, जैसे एक समय था जब हमारी आर्थिक बिल्कुल भी अच्छी नहीं थी, परंतु धीरे-धीरे हमारी आर्थिक स्थिति ठीक होने लगी और मैंने अपनी पढ़ाई पर फोकस किया। मैं आप सभी से यही कहना चाहती हूँ कि बुरे हालातों में कोई हमारा साथ नहीं देता इनका सामना हमें खुद ही सामना करना पड़ता है।

मेरे पूजनीय माता-पिता और प्रध्यापकों के सहयोग से मैंने अपनी पढ़ाई पूरी की और अब मैंने इस कॉलेज से शिक्षा पूर्ण कर ली है। जीडीसी पनारसा में मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला है और इस महाविद्यालय से मेरी बहुत सी यादें जुड़ी हैं। यह मेरे लिए एक शिक्षण संस्थान ही नहीं बल्कि मेरी सफलता की पहली सीढ़ी हैं। मैं अपने सभी भाई-बहनों को यही कहना चाहूंगी कि हमें बड़े से बड़े सपने देखने चाहिए

क्योंकि सपने केवल तभी पूरे होते हैं जब हम सही दिशा में मेहनत करते हैं यदि हमें 5-10 बार भी असफल होते हैं तो भी हमें हमेशा एक और प्रयास जरूर करना चाहिए। हमें सफलता अवश्य मिलेगी। क्योंकि रास्ते में चलते-चलते पत्थरों से मुलाकात हो ही जाती है, तो टकराते ही रहना।

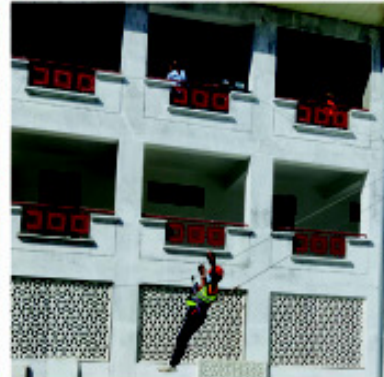
अगर जिंदगी में आकर मुसीबतों के पहाड़ भी टूट पड़े तो मुस्कुराते ही रहना।” बुरे हालातों में लोगों के ताने और अपनों का बुरा व्यवहार व्यक्ति को सिर्फ दुख ही नहीं देता बल्कि वह अंदर से टूटकर बिखर जाता है। यह एक बहुत ही दयनीय पीड़ा होती है इसलिए हमें अंदर से इतना मजबूत बनना है कि चाहे कुछ भी हो जाए हमें हार नहीं माननी है। अपने लक्ष्य से नहीं भटकना है। गूंगे और बहरे बनकर आगे बढ़ते रहना है। क्योंकि लोग हमारी कामयाबी से जलेंगे ही और हमारी नाकायी पर हंसेंगे भी। ऐसे लोगों के लिए हमारी नाकामी पर हंसेंगे भी। ऐसे लोगों के लिए हमारी सफलता से बड़ा कोई और जबाब नहीं हो सकता। फिर चाहे बात हमारी पढ़ाई की हो या फिर हमारी निजी जिंदगी की। क्योंकि “सब कुछ खोने के बाद भी अगर हम में कुछ करने की हिम्मत है, तो समझ लीजिए हमने कुछ भी नहीं खोया है।”

यदि हम सफल हो जाए तो हम अपना जीवन तो बदल ही सकते हैं पर साथ में दूसरों का जीवन भी बेहतर बना सकते हैं। इस बात को अपने दिमाग में बिठा लें कि यदि हम सफल हो गए तो पूरी दुनिया हमारी है और यदि हम असफल रह गए तो दुखदायी जीवन व्यतीत करने के साथ-साथ हमें बहुत सारी मुश्किलों का सामना भी करना होगा। इसलिए यह अति आवश्यक है कि हमें एक अच्छे इंसान बनने के साथ-साथ जागरूक होना भी आवश्यक है। ताकि हम अपने समाज, प्रदेश व देश के कार्यों में अपना योगदान दे सकें।

अंत में कुछ पंक्तियां युवा साथियों के लिए बुझाने लगी है आंखें हमारी, चाहे थम रही हो रपतार, उखड़ रही ही सांसे हमारी, दिल करता हो चितकार, दोष विधाता को ना देना, मन में रखना यही आस, रणविजयी बनता वही, जिसके पास हो आत्मविश्वास आत्मविश्वास।

शिवानी, बी कॉम, अंतिम वर्ष।

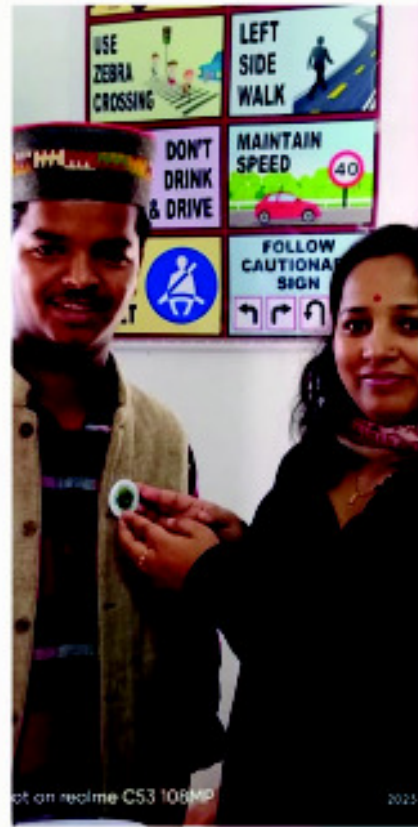
NSS Activities



COMMERCE



COMMERCE SECTION



Our
Champions



Editorial



In the present day world of globalisation and liberalisation of economies along with the concomitant change in technology, business strategies and methods, professionalization of Management, Corporate social responsibility, corporate ethos and so on, there is a pressing need for the students of Commerce to understand and analyse these business dynamic and face the challenges as well as opportunities emanating there from. It is precisely for this reason that our students were motivated to contribute articles mainly related to business themes : stock exchange, Social Media marketing, Tax Evasion and cybercrime and variety of other challenging topics or issues. I do honestly acknowledge that our principal Madam, Dr. Ursem Lata, has been the guiding spirit behind this noble mission and has been a great source of encouragement and support all throughout. I must extend my Congratulations to all the students who have contributed really insightful and thought-provoking articles.

Dr. Dimple Jamta
Staff Editor

Assistant Professor Department of Commerce.

It's a pleasure for me to be the editor of Commerce Section magazine named "Arjikiya". This section specially focuses on various topics related to Commerce and provides a platform for students and teachers to share their views and ideas with others.

I thank all the members of the editorial team (teachers and students) as well as all the contributors to this magazine who helped us to issue this magazine and make it all real. We believe that the Arjikiya will reach and develop its wide networks.

Shivani
Student Editor
B.Com III year

Impact of Tax Evasion in the Indian Economy

Tax evasion is an evil that haunts the economy of India but also is a worldwide problem. It has long lasting impact on the growth of India as we know tax evasion is the tax that is to be paid to the government but is evaded by tactics. The impact on the economy of India leads to the slow development of economy as the money which can be used for the developmental projects is halted by the crises of money. Tax evasion leads to government loss and it can be regained if the tax is paid back to be govt.

There are many causes behind tax evasion. Some of the causes of tax evasion are the existence of tax havens, lack of integrity on the part of the citizens, presence of informal economy, lack of simplicity in the tax legislations, inefficiency of tax administration etc.

Tax evasion is an illegal activity and it can take many forms, such as filling to report income, claiming false deductions, or failing to file tax returns altogether. Those who engage in tax evasion may face criminal charges and significant fines or imprisonment.

Kirti, B.Com. Final year.

Threats and Risk in E-Commerce

Threat to E Commerce

E-Commerce refers to the activity of buying and selling things over the internet.

Simply, it refers to the commercial transactions which are conducted online. E-commerce threat is occurring by using the internet for unfair means with the intention of stealing, fraud and security Bunch. E Commerce threats include malware and ransom ware attacks, social engineering cphishing, gov site scripting brute force attacks, denial of service CDOS and distributed denial of service (DDOS) attacks, malicious bots, SQL injection and API attacks.

Types of threats to E commerce

Tax Evasion : - Organization show the legal paper records of revenue to IRS. But in the case of E-Commerce shopping, online thansactions take place due to which funds get transferred electronically due to which IRS is not able to count the than saction properly and there are high chances of tax evasions by these organization.

Payment conflict : In E-Commerce payment conflicts can arise between users and the E-Commerce platforms.

Financial Fraud : Whenever or online transaction of transfer of funds takes place, it always asks for some pin or passwords to authenticate and allows only the authorized person to process the transaction.

SQL injections : SQL injection are used by attackers to manipulate the database of large organization. Attackers enter malicious code full of malware into the database and then they search for targeted queries in the database and then they collect all the sensitive information in the database.

Risks in E Commerce

These risks include the unlawful sharing of data, fraud, malware, and other security breaches not to mention vulnerabilities related to working with third party platforms, data privacy laws, service issues.

Bholi, B.Com. 2nd year

Social Media : The Future of Shopping

Social media has a great importance in future of online shopping. Research says that every person use social media app atleast 2 hours in a day. Social media platforms collect data about the interests, preferences, and behavior of their users. They use this information to deliver personalised advertising and

targeted advertising.

As a result, user sees ads that are relevant to their interests, making their shopping experience more tailored and convenient. Social shopping accompany e-commerce with social media, allowing users to purchase products directly from platforms like Instagram and Facebook. 81 % of consumers purchasing decisions are influenced

by their friends social media posts.

Social media is transforming retail by providing more interactive and personalised shopping experiences often with features like live streaming, user reviews, and instant purchase with services 24*7. Social media apps also provide time and place utilities. Thus social media has great in future of online shopping.

Anamika, B.Com 3rd year.

Threats, problems in Electronic payment system (EPS)

Mobile payments are becoming increasingly popular, as more and more business and users are turning to digital solutions for their transactions. While this is convenient, efficient, and cost-effective, it can also create potential security risks that can impact both users and businesses alike. It's important for both businesses and users to be aware of the potential security threats associated with mobile payments so they can take the necessary steps to protect their company and their customers.

The biggest security threats that business should be aware of when it comes to mobile payments are :

1) Malware : Malware is a type of malicious software that is designed to cause damage to a computer, server or mobile device. It can be used for anything from stealing data to disrupting operations. When it comes to mobile payment security, malware can be used to target smart phones, tablets, and other devices to gain access to sensitive information like credit and numbers, accounts passwords, and more. Malware can be distributed in a variety of ways such as through malicious links sent via text message, e-mail attachments or even through downloaded apps. Therefore, it's important for businesses to ensure they have secure processes in place when it comes to downloading any apps or opening links.

2) Phishing : Phishing is one of the most common forms of cyber-attacks and it can be particularly dangerous when it comes to mobile payments. The process usually involves fraudsters sending fake e-mails or text messages that appear to be from a legitimate source, such as a bank, an online retailer, or a payment processor. These messages will often contain links or attachments that direct the recipient to a malicious website, where they'll be asked to enter personal information, such as credit and details, or passwords. The best way to protect yourself from phishing attacks is to be aware of the signs and to never click on any suspicious links or attachments. It's also important to be careful when using public wifi networks.

3) Using public Wifi : When it comes to online payment, using public wifi can be one of the most dangerous security threats for businesses. In fact a recent survey revealed that 26% of participants who use public wifi are highly vulnerable to fraud.

Public wifi networks are usually open and unsecured, meaning that anyone can access them without having to provide any type of authentication. This makes it easier for hackers to intercept data being sent over the network including information associated with payment transactions.

Problems in electronic payment system :

1. Lack of usability: Electronic payment system requires large amount of information from end users or make transactions more difficult by using complex websites interfaces.

2. Lack of Security: Online payment system is an easy target for stealing money and personal information. Customers have to provide credit card and payment account details and personal information online.

3. Lack of trust- Electronic payments have a long history, and reliability. It is a new system without established positive reputation. Potential customers often mention this risk as the key reason why they do not trust a payment services and therefore do not make internet purchases.

4. Lack of Awareness: Making online payment is not an easy task. Even educated people also face problems in making online payments. Therefore, they always prefer traditional way of shopping instead of online shopping sometimes there is a technical problem in server customers tried to do online payments but they fails to do. As a result they avoid it.

5. Online payment are not Feasible in Rural areas. The population of rural areas is not very literate and they are also not able to operate, Computers. As they are unaware about technological innovations. They are not interested in online payments. So the online payment system are not feasible for villagers.

Sudipti, B.Com 2nd Year.

Corporate Social Responsibility

It is a set of obligations to pursue those policies to make those decisions, or to follow those lines of action which are desirable in term of the objectives and values of our society. It is the overall relationship of the corporate with all its stakeholders. Elements of social responsibility include investment in community outreach, employee relations, creation and maintenance of employment environmental stewardship and financial performance.

1. Corporate Social Responsibility a Growing Agenda :

External pressures for CSR continue to grow. Numerous organizations monitor, rank and report social performance. The legal, business and reputation risks are great for companies engaging in practices deemed unacceptable.

2. The Moral purpose of Business :

The most important thing a corporation can do for society is to contribute to a prosperous economy. Business has no need to be defensive about its role. However, corporations depend on a healthy society to sustain competitiveness. Companies have the tools, capabilities, and resources to have a major impact on social issues. Each company should identify the particular set of societal problems that it is best equipped to help resolve, and from which will arise the greatest long term synergy with its business. Addressing these issues using the principles of shared value will lead to self sustaining solutions.

3. Advantages of corporate social responsibility:

There are several advantages to corporations when they exhibit a sense of CSR and implement it, such as: Improved financial performance, Enhanced brand image and reputation, Increased sales and customer loyalty, Increased ability to attract and retain employees, Innovation and learning.

Integrating Company and Community

There is an inevitable link between business and society. A healthy business depends on a healthy community to create demand for its products and provide a supportive business environment. A healthy society depends on competitive companies that can create jobs, support high wages, build wealth, buy local goods, and pay taxes. There is a long term synergy between economic and social objectives.

Anmisha, B.Com, 3rd Year.

Banking

Bank is an organization which accepts deposits, lends money and perform other agency functions. In modern age, banking has become the foundation of economic development. The term bank is being used since long back but his inception is still mysterious. Now a days, except for the work of transaction in money, bank performs many other functions also like credit creating, agency functions, general services etc. In India 14 banks in public sector. In India, banks like J&K bank Ltd. Punjab Bank Ltd etc. Central bank are the open bank in banking structure of country. The main functioning of bank is to maintain the economic stability of the country. In India, RBI is the central bank. This Bank works as a Bank of Government. The introduction of computer and internet in the functioning of the banks is called electronic banking. Because of these services the consumers do not go to the bank every time. Thus bank provide facilitates speedy and effective service to people. These are good services provided to the people by the banch.

Amnisha, B.Com 3rd year.

Bit coin is a noble digital Mechanism

Introduction :- Bitcoin (BTC) is a crypto currency, a virtual currency designed to act as money and a form of payment outside the control of any one person, group, or entity, thus removing the need for third-party involvement in financial transactions. The Bit coin was invented by Satoshi Nakamoto in 2008.

Is Bit coin is legal in India :- India neither prohibits nor allows investment in the crypto currency market. In 2021 the govt. is exploring the creation of a state backed digital currency issued by the Reserve Bank of India, while banning private bit coins.

How Bit coin works :- Bit coin is a form of digital currency that was block chain technology to support transaction between users on a decentralised network. New Bit coins are created as part of the mining process and as a reward to people whose computer systems help validate transaction. Buying bit coin exposes you to a volatile asset class. As a means of payment, Bit coin are mainly used as financial investments. And with good reason, the volatility of crypto currencies means they can generate colossal gains over the long term, but also with significant losses. Bit coin is a risky investment with high volatility.

Shivani, B. com 3rd Year

Non Performing assets

Meaning of Non Performing Assets:-

Non Performing Asset (NPA) is a loan or advance for which the principle or interest payment remained overdue for a period of 90 days. Banks are required to classify NPAs further into substandard, doubtful and loss assets.

Causes of NPA

1. Misutilisation : When borrower use the borrows fund for some other purpose instead of using it for the purpose he takes loan.

2. Willful defaults: This is the common factor behind NPA.

There are borrowers who are capable of paying Bank loans but they intentionally do not repay.

3. No proper follow up : Once the loan amount is disbursed by the bank to borrowers, banks need to follow up or need to be in contact of borrower.

4. Ineffective lending : This is the another major reason for increasing NPA for bank. When loan is granted to a person without proper analysis of credit-worthiness. May be the borrower already has undertaken other loans too and his earning is not good enough to repay the loan.

Impact of NPA on Bank

1. Reduction in profitability : Interest on loan is the main in-

come of the bank. High level of NPA loses the principal and interest on loan. As a result it reduces profit of the benefit.

2 Effect on funding : Rise in NPA result in less funding to other borrowers due to fear of further NPA.

3. Loss of Goodwill : High amount of NPAs reduces the profitability of the banks in reality as well as in balance sheet.

4. A twin balance sheet problem : Higher NPA puts stress on the balance sheet of both banks and corporate houses.

5. Recapitalisation by Govt : Government budget comes under pressure to bailout loans of NPA's.

Anshita, B.com 3rd Year.

Importance of Commerce in our life

Commerce is an essential aspect of our daily lives as it includes all the activities related to the exchange of goods and service between individuals, business and government.

Some Reasons why Commerce is Important:

1. Economic Growth : Commerce helps in the growth of a country's economy by promoting business activities and creating employment opportunities.

2. Job Creation : Commerce creates job opportunities in various sectors such as banking insurance, retail, transportation and logistics among others.

3. Consumer Satisfaction : Commerce enables consumer to access a wide range of goods and service which satisfies their needs and wants.

4. International Relation : Commerce plays a crucial role in promoting international relations by enabling trade between countries.

Anamika, B.Com 3rd Year.

Stock Market

Stock market is a place where securities are purchased or sold. It is a broad term which refers to all the companies that list their shares for public investors to buy. Stock exchange is the formal organization that enables the companies to list their shares and offer them for sale to the public. It encompasses both primary and secondary markets and is a combination of OTC cover the counter, trading, electronic trading and stock exchanges. It is the platform for trading, enabling companies to raise capital from the public and for funding their expansion plans. Stock market is one of the significant components of free market economy. It can be classified as bullish or bearish, depending upon the sentiment of investor. A bull market is that where the investors all interested in buying shares in anticipation of future profits where as a bear market refers to a market where investors try to dispose off their holdings in anticipation of a fall in the market.

The major function performed by stock market is efficient price discovery and efficient dealing in securities. In India stock market witnessed tremendous changes since 1990's. It is controlled and regulated by the securities and exchange board of India.

Deepika, C.Com 3rd Year.

BHIM

BHIM (Bharat Interface for Money) is an Indian Mobile Payment App developed by the National payments corporation of India (NPCI) based on the Unified Payments Interface (UPI). Launched on 30th December 2016, it is intended to facilitate e-payments directly through banks and encourage cashless transactions. It was named after Dr. Bhimrao Ambedkar. The application supports all Indian banks which use UPI, which is built over the Immediate Payment Service (IMPS) infrastructure and allows the user to instantly transfer money between 170 member banks of any two parties. It can be used on all mobile devices.

BHIM allows users to send or service money to or from UPI payment addresses, or to non-UPI based accounts (by scanning a QR code with account number and IFS code or MMID code).

Unlike mobile wallets (Paytm, Mobikwik, M-pesa, Airtel Money, etc.) which hold money, the BHIM app is only a mechanism which transfers money between different bank accounts. Transactions on BHIM are nearly instantaneous and can be done at any time, including weekends and bank holidays.

BHIM now also allows users to send or receive digital payments through Aadhaar authentication.

Arjun, B.Com 3rd Year.

Impact of E-Commerce on India's Economy

E-Commerce is a great platform to develop and understand economic and social growth in Indian economy. Because of globalization, liberalization and relaxation in imports and exports between nations and economies across the world will witness better knowledge and information technology Growth. E-commerce is playing an important role.

E-commerce in India is growing not just because the internet penetration is increasing but also due to the favorable ecosystem developed by the market. E-commerce and electronic applications in automation has brought in tremendous growth in India. E-commerce is connecting rural India for the business hence developed village economy. According to national report of E-commerce development in India, it was clearly stated that there is an increase in internet penetration in India to a very large extent. Internet user increase to 429.23 million in 2017 which is expected to take a huge upward trend to 829 million in 2021, which will thus help internet economy of India to grow significantly.

Neha Thakur, B.Com 3rd Year.

Cashless Economy

The term cashless literally means a person without cash. It refers to the digital forms of transaction. Cashless transactions include transition through credit cards, debit cards, virtual wallets or electronic fund transfer systems by the bank. It reduces the cash transactions and increases the use of digital transactions.

Implementing cashless economy has numerous benefits and it is a great way to develop our economy. It not only benefits to country status but also adds personal advantages and saves time. We need not wait longer in bank queues to make single transactions, a few clicks over smart phone or computer system shall do the job safely and quickly. If you have to pay any money in cash to anyone then you give the cash, count it and maintain record of it but in online cash is transferred and credited in recipient account.

Cashless economy stops black money in the market. When all transactions are to be made through banking system, there is no way to store money without records. All the illegal activities like immoral trafficking, drug business smuggling etc are done in cash and implementing digital transactions can almost destroy them. Cashless economy favours a paperless environment friendly needs. It saves a huge amount of money spent on printing and maintenance of currency.

Sunit, B.Com 3rd Year.

E- Commerce : Blessing to the consumer

Introduction: ई-कॉमर्स की शुरुआत 1994 ई० में हुई थी ई कॉमर्स की खोज माइकल एल्ट्रिच ने 1979 में की। ई कॉमर्स में कम्पनी लांच 1982 में हुई और 1990 में ई-कॉमर्स का उदय हुआ। भारत की सबसे बड़ी ई-कॉमर्स कंपनी फ्लिपकार्ट है ई-कॉमर्स के जनक वैथीश्वरन है। यह ई-बिजनेस के व्यवसाय का अंग है। ई-कॉमर्स एक इलेक्ट्रॉनिक नेटवर्क है, यह मुख्य रूप से इंटरनेट पर वस्तुओं और सेवाओं की खरीद और बिक्री या धन या डेटा का संचारण करने के लिए है।

Purpose of E - Commerce: इंटरनेट के माध्यम से व्यापार का संचालन है, न केवल

खरीदना और बेचना, बल्कि ग्राहकों को सेवाएं और व्यापार के भागीदारों के साथ सहयोग भी इसमें शामिल है।

Validity of E Commerce: व्यवसायों को डेटा उल्लंघनों और हैकिंग प्रयासों सहित साईबर सुरक्षा जोखिमों के निरंतर विकसित होते परिदृश्य का सामना करना पड़ता है।

Benefits and Weakness: उपभोक्ताओं को उत्पादों और सेवाओं को ऑनलाइन सर्च करने, उन्हें खरीदने, चुकाने और बिक्री का व्यवस्थापन करने की सुविधा बिना कठिनाई के मिल जाती है।

लोग ऑनलाइन सामान मंगवाते हैं, उन्हें सामान

के बदले कुछ और मिलता है इसके साथ ही इसमें पेमेंट भी ऑनलाइन होती है, और इसमें साइबर फ्रॉड का डर भी होता है।

Conclusion of E- Commerce: ई-कॉमर्स के जरिए सामान सीधे उपभोक्ता को प्राप्त होता है और सामान भी सस्ता मिलता है। इससे बाज़ार में भी प्रतिस्पर्धा बनी रहती है ग्राहक सामानों की तुलना कर पाते हैं जिसके कारण ग्राहक को उच्च गुणवत्ता वाला सामान मिलता है।

रेशमा, बी कॉम तृतीय वर्ष।

Introduction: स्टार्ट अप इंडिया भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है, जिसका उद्देश्य देश में स्टार्ट अप्स और नए विचारों के लिए एक मजबूत परिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है, जिससे देश का आर्थिक विकास हो एवं बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर उत्पन्न हो। स्टार्ट अप एक इकाई है। जो भारत में पांच साल से अधिक से पंजीकृत नहीं है, और जिसका सालाना कारोबार किसी भी वित्तीय वर्ष में 25 करोड़ रुपये से अधिक नहीं है। यह एक इकाई है, जो प्रौद्योगिकी या बौद्धिक संपदा से प्रेरित नये उत्पादों या सेवाओं के नवाचार, विकास, प्रविस्तारण या व्यवसायीकरण की दिशा में काम करती है।

स्टार्ट अप अंतर मंत्रालयी बोर्ड से प्रमाण पत्र प्राप्त करने के बाद कर लाभ के लिए योग्य होगा। स्टार्ट अप इंडिया की लांचिंग 16 जनवरी 2016 में की गई है।

Benefits of startup India : स्टार्ट अप इंडिया योजना के शुभारंभ के बाद, सरकार द्वारा I-MADE कार्यक्रम नाम से एक नया कार्यक्रम शुरू किया गया, जो भारतीय उद्यमियों को 1 मिलियन मोबाइल ऐप स्टार्ट-अप बनाने में मदद करने पर केंद्रित था। भारत सरकार ने प्रधान मंत्री मुद्रा योजना भी शुरू की थी, जिसका उद्देश्य निम्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि के उद्यमियों को कम ब्याज दर ऋण के माध्यम से वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

1. पेटेंट पंजीकरण शुल्क को कम करने के लिए।
2. 90 दिन की निकास खिड़की सुनिश्चित करने के लिए दिवालियापन संहिता में सुधार।
3. संचालन के पहले 3 वर्षों के लिए रहस्यमय निरीक्षण और पूंजीगत लाभ करके मुक्ति प्रदान करना।
4. अटल इनोवेशन मिशन के तहत इनोवेशन

Startup India

हब बनाना।

5. नवो-भेष संबंधी कार्यक्रमों में 10 लाख बच्चों को शामिल करने के साथ-साथ 2-5 लाख स्कूलों को लक्षित करना।

—स्टार्ट अप कर्मों को आईपीआर सुरक्षा प्रदान करने वाली नई योजनाओं को विकसित करना।

— पूरे देश में अद्यमिता को प्रोत्साहित करना।

— भारत को दुनिया भर में स्टार्ट अप हब के रूप में बढ़ावा देना।

GST (Goods and Services Tax)

भारत में जीएस की शुरुआत 1 जुलाई 2017 को हुई यह एक प्रत्यक्ष कर सिस्टम है जो वस्तुओं और सेवाओं पर लगाया जाता है, जीएसटी के लागू होने से पहले, भारत में कई अलग-अलग प्रकार के टैक्स लगाए जाते थे, जैसे वैट सेवा कर, उत्पाद शुल्क आदि इस प्रकार के टैक्स का भुगतान करने में देश के व्यापारियों को परेशानी होती थी, इन सभी परेशानियों को ध्यान में रखते हुए पहली बार 1999 में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने जीएसटी को लागू करने का विचार दिया था, लेकिन 2016 में, संसद ने जीएसटी अधिनियम पारित किया और 1 जुलाई 2017 को पूरे देश में एक साथ जीएसटी अधिनियम को लागू किया गया।

जीएसटी लागू होने के फायदे :

— जीएसटी लागू होने से केन्द्रीय उत्पाद शुल्क राज्य शुल्क, लग्जरी कर, सेवा कर, बिक्री कर व अन्य कई करों को जोड़ दिया है। इससे टैक्स की गणना और संग्रहण प्रक्रिया सरल हो गई है।

— टैक्स लेने की प्रक्रिया की पारदर्शिता में सुधार हुआ है।

— जीएसटी के कारण अब वस्तुओं और सेवाओं की लागत में कमी आयी आयी है क्योंकि पहले कई मूल्य वर्धित कर हटे हैं।

— 20 लाख से कम टर्नओवर वाले व्यापारियों को जीएसटी का भुगतान करने की आवश्यकता नहीं है। वहीं उत्तर-पूर्वी राज्यों में, यह सीमा 10 लाख रुपये है। यह छोटे व्यवसायों के लिए एक बड़ा लाभ है।

— भारत में, असंगठित क्षेत्र बड़े पैमाने पर रोजगार प्रदान करने के साथ भारी रेवन्यू जनरेट करते हैं लेकिन टैक्स के समय वह अनियमित रहते हैं अब जीएसटी आने से इसकी भी विसंगति ठीक हुई है।

— पहले की प्रणाली के तहत वस्तुओं और सेवाओं के लिए अलग-अलग कर थे जिससे देयता निर्धारित करने के लिए लेन-देन मूल्यों को माल और सेवाओं के मूल्यों से अलग करना होता था जो कि एक बड़ा सर दर्द था।

— जीएसटी पूरी तरह से एक संघटित प्लेटफॉर्म है, जो माल व सेवा कर गतिविधियों के संचालन को सरल और सुनिश्चित करता है।

— किसी भी वस्तु के बनने और उस सेवा के उपभोग के अंतिम स्थान पर ही जीएसटी लगता है जिससे यह फायदा हुआ कि निर्माता से लेकर रिटेलर आउटलेट तक दोहरे कराधान को हटाया जा सका। यह आर्थिक समस्याओं को खत्म करने की दिशा में एक प्रशंसनीय कदम है।

— जीएसटी के मुख्य लाभ में से एक यह है कि करदाता ऑनलाइन पंजीकरण, रिटर्न दाखिल करना और कर का भुगतान सब कुछ ऑन लाईन जीएसटी पोर्टल के माध्यम से कर सकते हैं।

— पहले की वैट प्रणाली में, ई-कॉमर्स व्यवसायों का कर अनुपालन के संबंध में काफी अंतर था। लेकिन जीएसटी ने अंतर-राज्य माल की आवाजाही से संबंधित व अन्य जटिलताओं को भी समाप्त कर दिया है।

दीपिका, बी, कॉम तृतीय वर्ष।

NSS Best Volunteers session 2023-24



Bavita, B.A. 3rd Year
Best NSS Volunteer (Female)



Gulshna, B.A. 2nd year
Best NSS volunteer (female)

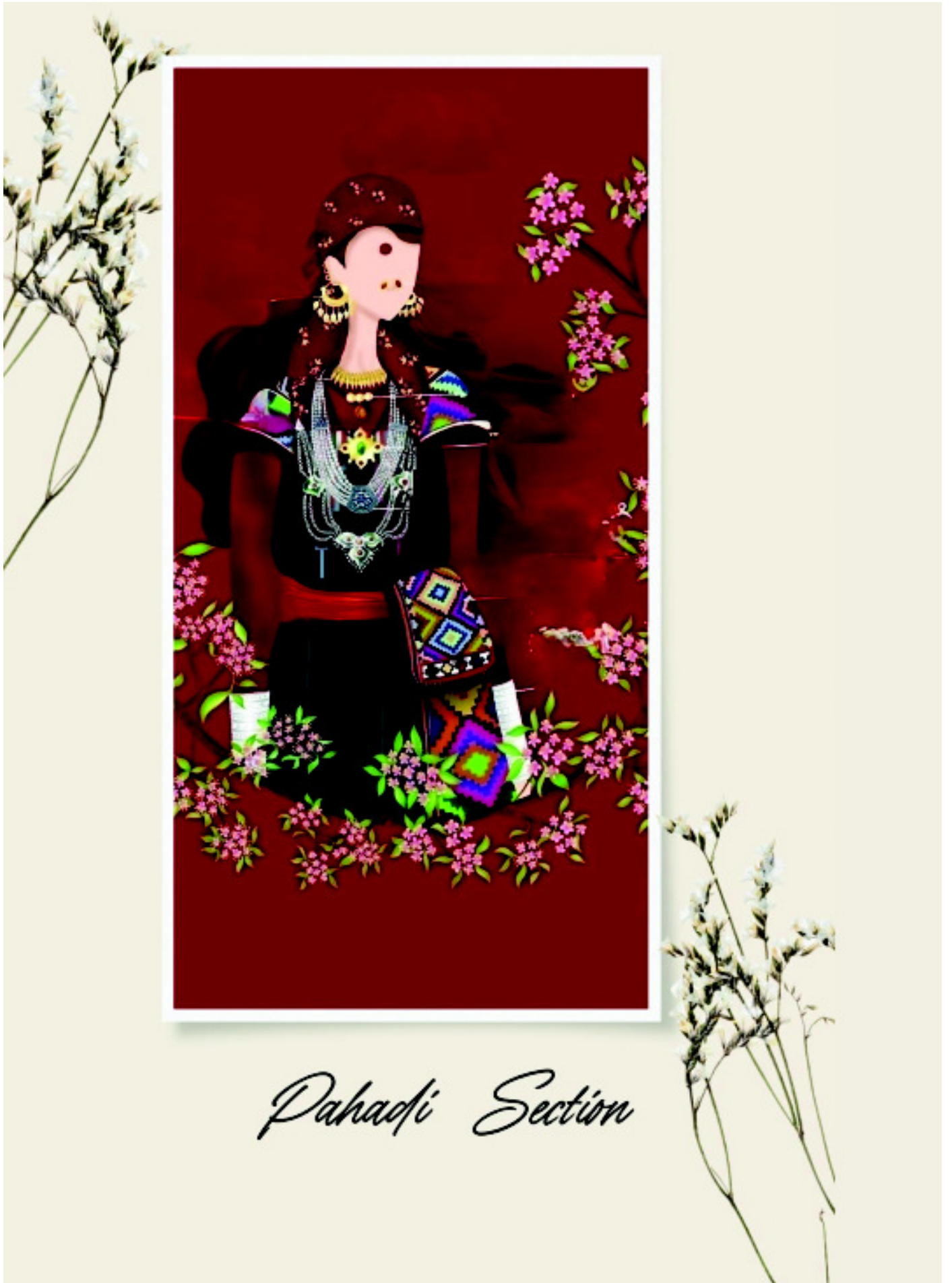


TijenderSubodh, B.A. 2nd Year
NSS Best Volunteer (Male)



Nilesh Kumar, B.A. 2nd Year
Best NSS Volunteer (Male)





Pahadi Section



SWARAJALI
CSCA
RED RIBBON
PTA MEET



सम्पादकीय



प्रिय पाठको,

मा बेरे इह बड़ी खुशी री गल आसा कि एसा बेरी म्हारे महाविद्यालय री पत्रिका अर्जिक्या रा पहाड़ी अनुभागा रा सम्पादक बणने रा मौका भेटा सोभि का पहिले मा धन्यवाद करणा महाविद्यालय री प्राचार्या डॉ उरसेम लता जी होरा रा जूणी री छत्रछाया मंजे आज म्हारा महाविद्यालय आज बड़दा लाग़ा रा, संघा मा धन्यवाद करणा पत्रिका री मुख्य संपादिका सहायक आचार्या चारु अल्हुवालिया जी होरा रा जुनी रे मार्गदर्शना मंजे म्हारी पत्रिका रा इह अंक छापणा लाऊ ५ जेड़ा कि हामें सोभे जाणदा कि आजकाला रा दौर आधुनिकता रा दौर आसा, हामें लोग इहु आधुनिकता दौरा मंजे एतरे आजू बड़ी कि आपणी संस्कृति, आपणी भाषा होर आपणी बोली विसरणी लाई एबा म्हारा इह कर्तव्य आसा कि हामा आपणी संस्कृति, भाषा होर बोली बचाई जाहणीएसा गला ध्याना मंजे जाहदे, म्हारी महाविद्यालय री पत्रिका रा इह एक होछा जेड़ा प्रयास आसा कि म्हारे महाविद्यालय रे होनहार शोहरू होर शोहरी जेड़ी आपणी पहाड़ी बोली मंजे आपणे वचार लिखे, तेयां एसा पत्रिका मंजे प्रकाशित करणे लाईसोभि का वढिया गल इह आसा कि म्हारा महाविद्यालय एड़ी जगहा बसु रा कि इंदी कुल्लू री गड़सा घाटी रे, दियार घाटी रे होर मंडी री शनोर घाटी रे, सराज घाटी रे शोहरू होर शोहरी पड़दे इहंदा, जुनी रे कारण पत्रिका मंजे तमा बे कुल्लूवी, शानोरी, सराजी होर मंड्याली बोली मंजे लेख पड़ने बे भेटणें प्मा एसा गला रा पूरा विश्वास आसा कि म्हारी पत्रिका रा यह अंश सोभि पाठका वे ज्ञानवर्धक सावित होणा ।

धन्यवाद

कृष्ण लाल
सम्पादक पहाड़ी अनुभाग
एवं सहायक आचार्य इतिहास विभाग

प्रिय पाठको,

हाँऊ आपने आपा बे ऐतरा भाग्यशाली मना सा कि एसा साला म्हारे महाविद्यालय री पत्रिका अर्जिक्या री पहाड़ी अनुभागे री छात्र-सम्पादक बणने रा मौका मिलू। मेरा पहाड़ी बोली मंजे लिखने रा सभी ना बड़ा मकसद ऐ सा कि आसे आपनी ओरे-पोरे री गला, आपणी संस्कृति होर रहण-सहण रे बारे आसानी संघा लिखी सका सा। सभी ना बड़ी गल ऐ सा कि ऐसा पत्रिका रे जरिए आसा सभी बे आपणी संस्कृति रे बारे मंजे लिखने रा मौका मिलणा। म्हारी पहाड़ी बोली मंजे एक कहाबत भी सा: नेड़ा री झूरी, घड़ी-घड़ी रा मेला, दुरा री झूरी, लोमी सराली रा फेरा, अर्थात जेतरा नेड़ आसे आपणी संस्कृति होर रीति-रिवाजा ना रोहले, तेतरा आसे ऐतरे बारे न जाणने रा ता समझणे रा मौका मिलणा, होर जेतरा आसे एता ना दूर जाले तेतरा म्हारी संस्कृति होर रीति-रिवाजा रा नाश होणा ५ आसा रा महाविद्यालय ऐड़ी जगहा ना सा ज़ोखे चारों तरफ़ा देऊ-देवी रा वास सा। ऐड़ी जगहा न रहइया ता आसे आपणी संस्कृति होर रीति-रिवाजा रे बारे ना सभी ना ज्यादा जाणी सका ता होरा लोका बे भी एसा पत्रिका रे माध्यमा ना दसी सका सा। रीत ना समझी रिवाज ना जाणू, केड़ी तरक्की रा काल ए माहणू, आपणी बोली बोलदे शर्मा हुई, आसा रा-तुसा रा दूरा-पारा री हुई, ता दोस्तों चका आपणी कलमा, लिखा जो सा तुसा रे मना ना, दुई गला जिउए री गलानी, धिक ता लिखा होर दसा आपणी शनोरा आली।

प्रिया ठाकुर
छात्र-सम्पादक पहाड़ी अनुभाग
(कला स्नातक द्वितीय वर्ष)

कुल्लू घाटी

कुल्लू घाटी री गल की लाणी,
औखे हर मर्द राजा हर बेटड़ी राणी,
कुल्लू घाटी री गल की लाणी,
ग्रां, ग्रां न देऊ-देवते,
आपणी जाचा लोभे मनाणी,
कुल्लू घाटी री गल की लाणी ।
आपणै कर्म आपणे भागा,
कुल्लू घुमदा विश्व लागा,
हर घोर बिजली हर घौरा पाणी,
हांऊ की दसणू एई देशे री कहाणी,
कुल्लू घाटी री गल की लाणी ।
हरीयाली रे बारे न दसणा की,
शोभली कैंडी रोहतांग मनाली,
सैलानी नी थकदे भाली
जोता-जोता न ठंडे जायरू,
मणीकर्ण तोता पाणी,
कुल्लू घाटी री गल की लाणी ।
उथड़ी-उथड़ी हिऊए री धारा,
गदगद भैगदा ब्यासा रा पाणी,
कुल्लू घाटी री गल्ल की लाणी ।
खाणे वे कोदरा होर छल्ली री रोटी,
पीणे वै जायरू पाणी,
कुल्लू घाटी री गल की लाणी,
देऊ देवी रे बारे न दसणा की,
बिदा-दसमी री लिखणु कहानी,
रथ निकलु रघुनाथे रा संघे,
कुल्लू रे राजा राणी,
कुल्लू घाटी री गल्ल की लाणी ।
एतरी लंबी गप्प कैंडे शणैनी ।

रवि शर्मा, कला स्नातक, प्रथम वर्ष ।

इम्तिहान

जैबे लागे इम्तिहान, शुकदी लागी जान ।
पढाई रा पौऊ जैबे जोर, किछ नी हेरीदा
तैबे होर ।
खाणा-पीणा लागा छुटदा, पौढदे-पौढदे
लाग गौला शुकदा ।
याद केरी-केरी ऐबै लाए प्रश्न बिसरने ।
इम्तिहाना रा धियाड़ा सा सेभी न माड़ा ।
जिन्दगी सा एक इम्तिहान, जुणीए पास
केरू ते बैणे महान ।

शिवानी वाणिजय स्नातक,
तृतीय वर्ष ।

बरसाती रा कहर

ऐसा बरसाती रा सुणा लोको तुसे कहर
जेस री गवाह थी मेरी नज़र
हिल्ली गई धरती होरा कांबी गया पूरा
शहर
हऊवा बरखा कन्ने घोर रात थी न्याहारी
बिजली चमके लस-लस
बदल्ल फटणे कन्ने हड़ पऊणे थे जारी
नदी नाले होर दरयाऊआ ही पाणी
सड़का मंझ था पाणी
ऐड़ा लगो जिहयां आज ही
खत्म हुई जाणी माणुआ तेरी कहाणी ।
टनला बनाई डैम बणाये
सड़का बनाई दीति फोर लैण
गाड़िडया री स्पीडा देखी के
डर लगा के बद हुई जाणे नैण
धरतीया ते चांद तक पूजी के
करी लेया विकास बोलया करी सूर्यावंशी
ये कदुरता कन्ने छेड़ी के
करी लेया अपणा सत्यानाश
ये ही अर्ज ही तुसा कन्ने
के लोको मत डरा कुदरता
कन्ने हुण सारी टेक्नालाजी फेल हुई
जाणी जेबे फेरा देई कुदरत
देयो देविया रानी सुणेया
अवैध खणन डरी के
खाडा बल्ले बणाई ते मकान
सभली जावा लोको नई ता
सब बणी जाणा शमशान
हाथ जोड़ी के तुसा करदे पुकार
बरसाती रा कहर देखी के मच्ची गया
चऊ तरफ हा हा कार
बंद हुई गई बिजली सड़का
ता थमी गई गाड़िया रे चक
आसा री छोटी काशी भी हुई
पाणी के हुई लबालब
बचया था सिर्फ पंचवक्र
हर तरफ ता रिवा और
शंकर रा जमकार
संभली जाओ न तो देखणा
नी मिलणा तुआ जी ये संसार ।

बिन्दू सुर्यवंशी,
सहायक पुस्तकालय अध्यक्ष ।

कोशिश

कोशिश केरनु आले री कदी हार नी हुंदी ।
कदी हार नी हुंदी ।
लहरों न डोरी केरे नौका कदी पार नी हुंदी,
कोशिश केरनु आले री कदी हार नी हुंदी ।
नहीं चींटी जेबे दाना लेई केरे चलदा
चढ़दा दीवारा पान्दे सो शऊ बार फिसलदा ।
कने रा ऐ विश्वास सो में साहस भरदा,
चढी केरे गिरना,
गिरी केरे उठना बड़ा बांका लागदा ।
आखिरकार तेसे री मेहनत बेकार नी हुंदी,
कोशिश केरनु आले री कदी हार नी हुंदी ।
डुबकियां सिंधु में जेबे भी गोताखोर लांदा,
जाई-जाई केरे खाली हाथ तीयां ऐन्दा,
बढ़दा सा दुगना उत्साह ऐसे हैरानी में
मुट्ठी तिन्हे री खाली हर बार नी जान्दी ।
कोशिश केरनु आले री कदी हार नी हुन्दी ।
कदी हार नी हुन्दी ।

निकिता टैगोर,
कला स्नातक, तृतीय वर्ष ।

आमा बापु रा प्यार

आमा बापु रा प्यार,
सा ऐसा दुनिया रा अनमोल तोहफा,
तिहां रे बिना सा अधूरा मेरा ऐ संसार,
आमा रा आंचल त बापु रा प्यार,
कदी तिहांरी झिड़का, ता कदी तिहांरा दुलार
बचपन बीता फुला साही,
जिंदगी न थी बहार ।
फेरी जुआनी री कठीनाइए केरा
अहां पान्दे बार,
लड़-खड़ाई जांघा मेरी पर सम्भली गई,
क्योंकि मुंहा आगे थी मेरे
आमा-बापु रा प्यार ।
हांऊ सच्चे दिला न केरदा एक अरज,
हे मेरे देऊआ कोई रे आमा बापु न हो जुदा ।
आम बापु हुंदा बच्चे री शक्ति,
आमा बापु रे बिना शुनी सा आसा री बस्ती,
मेरी तैंया सा मेरे आमा बापु मेरे भगवान,
भगवान करे तिंहा वे लग जाए मेरी भी उम्र ।

विपाशा ठाकुर,
कला स्नातक, तृतीय वर्ष ।

पनारसा ग्रां रा नजारा

मेरे पनारसा ग्रां रा नजारा
सा सभी न प्यारा।
देऊ देवी रा सा औखे डेरा
केड़ा बांका सा पनारसा रा नजारा।
कदकी लागे तुसा वे वक्त ना
जरूर लाई तुसे पनारा ग्रां रा फेरा।
चारों पासे सा पहाड़ा रा घेरा,
बांके लोका रा सा औखे डेरा,
औखली शोभा औखे ऐजिया हेरा।।
उम्र भर सो गुण गांदा रौहु।
शेषनागे रा सा औखे स्थान जुणी रा केरा
सी सब लोके रा सम्मान।
चारों पासे सा औखे चीला रा घेरा,
दुजे पासे सा श्यामाकाली रा डेरा।
तुसा सभी ना सा निवेदन मेरा,
औखली शोभा औखे ऐजिया हेरा।
मेरे ग्रां रा नजारा,
सा सभी न प्यारा।

पिंकी ठाकुर, बीए द्वितीय वर्ष।

आसा रा प्यारा हिमाचल प्रदेश

हिंऊ रे जोता न हेरना शोभला नजारा
रूप जेड़ा देशा-देशा न प्यारा
वाणी औखली मीठी जेंडी मोगरू रा पानी
माहणू औखले शोभले सियाने
रीति-रिवाज सा औखले पुराने
गला कुण बुजला औखली पुरानी
देऊ-देवी सा सोठ कोई आसा लानी।

दूरा-दूरा न माहणू एज्जा सा
शरणा ते देऊ देवी री
दूर केरनी विपदा लो आसे री
आए देवभूमि हिमाचल लो म्हारी।।
सदा ढाहे मान लो औखरी
जुगा-जुगा लोड़ी जगमगानदा सदा
धाट्टु-टोपी लोड़ी पहचान रोही।
सभी न शोभला सभी न न्यारा
आसा रा 'हिमाचल' सा सभी न प्यारा।

**नेहा ठाकुर,
कला स्नातक, द्वितीय वर्ष।**

जरा सोचो

पेहरू काटिया मिलदा देउ,
काटदा हांउ भेड़ा रा दूंड।
मत नयान्दा पापै री चीकर,
मत छाटदा आपणा मुंड।
धौरती बेशिया सोच बचार,
मत मारदा बेजुवान।
चौखे रख तू डेहरे मोहरे,
मत केरदा लौहू लुहान।
हत्या सिर्फ हत्या सा,
हौई नेंई सकदी कदी भी पूठा।
परमेशरे री तें बिसरी बौत,
मत बहादा भेड़े रा खून।
मत तोपदा खूनी तलवारा,
तोप सच्चे तिन्हा गुरु गियाना।
मंदिरा वै तू मंदिर रख,
किवै बणाए बुचड़ खाना।
एक दिलै एक मने,
श्रद्धा सेहो आए भगत तेरे।
छंणकू दिल हुई भक्ती फिकी,
खूने रै डिबे सौहा न तेरे।
युवावती, कला स्नातक, द्वितीय वर्ष।

म्हारे बालू रा नजारा

म्हारे बालू रा नजारा
सा सभी लोके न प्यारा
देऊ देवीरा सा औखे डेरा,
जरूर लाए बालू रा फेरा।
चार पासे सा पहाड़ा रा घेरा
तेता आन्दरे सा सभी लोके रा डेरा।
हौरे भरे औखे सेऊआ रे बगीचे
चारो पासे सा चील-काइली रे बूटे।
तुआ सभी न ऐ अरजा सा मेरी
ओखली शोभा औखे एजीए हेरी।
औखले लोके री मीठी सा वाणी
गल नी बोलदे कोई भी माड़ी।
देवी जालपा सा वोसी री गाउं, देहरीनाल न
ता काली नाग सा अनसरे री धारा।
उथड़ी धारा पांदे वीर नाथ रा मंदिर,
औख एजिए हौआ सा मन पवित्र
फुलो री हौआ सी धरूठदी क्यारी
ऐ घाटी लागा सा मुंबै सेभिना प्यारी।
ऐड़ा सा म्हारे बालू रा नजारा
सा सभी लाकै न प्यारा।।

शिवानी ठाकुर, बीए, तृतीय वर्ष।

सैभी चीजे रा विशेष

महत्त्व सा

बगीचै न फूला रा, पार्का न झूला रा,
जिन्दगी न स्कूला रा विशेष महत्त्व सा।
ऑफिसा न कर्मचारी रा, मंदिरा न पुजारी रा
विशेष महत्त्व सा।
ढोंगे री चोओ री, हौथा री शोटी रा,
हिमाचला न छौली री शेटी रा
विशेष महत्त्व सा।
लड़ाई न वीरों रा फिल्मा न हीटी रा, हिसाबा
न जीरो रा विशेष महत्त्व सा।
देश न सरकारा रा, हप्ते न तुआरा रा
तीर्थ स्थान न हरिद्वारा रा विशेष महत्त्व सा।
जंगला न शिकारी रा, समाजा न नारी रा
विशेष महत्त्व सा।
चांदा न दागा रा, सूर्य न औगी रा और
माहणू न दिमागा रा विशेष महत्त्व सा।
शिवानी वाणिज्य स्नातक तृतीय वर्ष।

कुल्लू में हुई आपदा से सम्बधित एक लोकगीत

केड़ा हुआ तेरा रुशणां हो मेरे मालका
केड़ा हुआ तेरा रुशणां हो मेरे मालका।
लोका लादें लो तोबे ता दोष
नाऊ तेरा सा एक बहाना-2
केड़ा हुआ तेरा रुशणां हो मेरे मालका।
औड़ काट लागे छुटदे सारे
लागा हेरदा सभी बे नियारा-2
केड़ा हुआ तेरा रुशणां हो मेरे मालका
सारी लागी ऐ डोरदी दुनिया
केड़ी विपदा ओखे लो आई -2
केड़ा हुआ तेरा रुशणां हो मेरे मालका
हिमाचला रा हुआ लो बुरा
एकी दुजे पौदे बहाना लो लाऊ-2
केड़ा हुआ तेरा रुशणां हो मेरे मालका
सभी दोषा री जड़ सा माणु
लागा लालची बणदा माणु-2
केड़ा हुआ तेरा रुशणां हो मेरे मालका।
लाए काटने बुटे लो सारे
लासदे लागे ढोंग म्हारे-2
केड़ा हुआ तेरा रुशणां हो मेरे मालका
लादें दोष नोई बे सारे
नोई ता सा आपणी धारे-2
केड़ा हुआ तेर रुशणां हो मेरे मालका।
तुषार, कला स्नातक द्वितीय वर्ष।

पहले साही प्यार नी रैहेया बापू (पापा)

हुण पहले साही प्यार नी रैहेया
पुराणे घरा साही घर नी रहे,
भाईया साही प्यार नी रहेया,
ब्याह होई कने भाई भाई बिछड़ी गये,
हुण पहले साही प्यार नी रैहेया।
पक्केया घरा साही लोका रे
दिल भी पके होई गए,
गांव रे शोहरू शहरा च रही ने
शहरी होई गए,
गांव री यादां गांव च रही गईयां,
हुण पहले साही प्यार नी रहेया।
पुराणे घरा साही घर नहीं रहे।

विपाशा ठाकुर, बीए द्वितीय वर्ष।

बेटी बचाणी, बेटी पढ़ाणी

बेटी बचाणी, बेटी पढ़ाणी, बेटी आगे बढ़ाणी।
शुणा मण्डी रे माणुओं बेटी आसा बचाणी
बेटी सा आमा बापू रे कोहले री चीड़ी
बेटी सा जेंडा औच्छी रा तारा
मता मारदे पेटा न लोको होणा जुगा न्याहारा
औज बेटी नहीं होली तो काल
सभी वै मां-बहु नी होणी
शुणा मण्डी रे माहणुओं बेटी आसा बचाणी
बेटी नी चला सा एकी घौरा बे
बेटी चलासा दुई-दुई घौरा बै
जैबे बेटे घौरा न जन्म लैऊ तेबे खुशी मनाई
जैबे बेटिए जन्म लैऊ तैबे किबे दुख मनाऊ
बेटी पढ़ाणी, बेटी लिखाणी, बेटी आगे बढ़ाणी
शुणा मण्डी रे लोको बेटी आसा बचाणी।

हीना, कला स्नातक, द्वितीय वर्ष।

देऊआ देवी रा देश

सभी न शोभला सभी न प्यारा,
कुल्लू देश सा महारा।
घोणे जंगल उथड़ी धारा
देऊआ देवी ने सा ऐ बड़ा प्यारा।
उथड़े जीत हिऊरे री धारा
सभी बोहाआ सी पाणी धारा।
गांव-गांव औखे सी देऊआ-देवी रे मंदिर
लौका कैरा सी उन्हा रै दर्शन।
चौला-टोपी, पोटू, थीपू सा औखला वाणा
घीऊ-सिद्धू, खीचड़ी सा सैभी रा खाणा
नाओ नौचणे रे बड़े शौकीन
कौम केरले सी जेंडे मशीन।
भौले-भाले औखले लोका
गलवाता केरना रा सा शोभला सलीक।

ध्रुव महंत, कला स्नातक, द्वितीय वर्ष।

पहाड़ी लोक साहित्य में लोकोक्तियों का प्रयोग

- 1 जीन्दे न नी फुल्ले रा डोलरू, मोरिया फुल्लेरी हारा।
-जीवित व्यक्ति की तो कोई कद्र नहीं करता और मर कर उस पर पुष्प की मालाएं चढ़ाई जाती हैं।
- 2 काची कोणकी रे ठारा पकवान।
-कच्चे गेहूं की कई चीजें बन सकती हैं- अर्थात् जब तक कोई बात अधूरी हो तो उसमें कई मोड़ दिए जा सकते हैं।
- 3 हौथे री सिभी नैआ सी, मौथे री कोई नी नेन्दा।
-हाथ की चीज तो कोई भी छिन्न सकता है परंतु भाग्य में जो हो उसे कोई भी छिन्न नहीं सकता अर्थात् भाग्य का लिखा कोई टाल नहीं सकता।
- 4 लबडू बेनी लागदा किछ बोबरू बे लागगा सा घिऊ।
-बात कहनी तो आसान होती है परंतु व्यवहार में लाना कठिन होता है। लबडू का अर्थ हॉट है।
- 5 जुणीए केरी शर्म, तेईरे फुटे कर्म।
- जो आदमी व्यर्थ में शर्म करे जीवन में कभी भी उन्नति के पथ पर अग्रसर नहीं होता।
- 6 घौर फुक्कीया दियाली केरी।
-अपना नुकसान कर प्रशंसा प्राप्त करना।
- 7 जेतरा बाड़ तेतरा जुआड़।
-नुकसान से बचने के लिए जितनी ही सावधानी ले उतना ही नुकसान हो तो इस वाक्य का प्रयोग किया जाता है।
- 8 बीझे रे बोगे काटणे।
-अपनी ओर से ही बात को कह देना चाहे वह ठीक हो चाहे गलत।
- 9 बांदरे रा बुबु।
-थोड़ी सी चोट लगे पर उसको बताना अधिक।
- 10 दूधे रा दूध पाणी रा पाणी।
-सच्चाई छुप नहीं सकती, इंसफ हो ही जाता है।

हिना, कला स्नातक, द्वितीय वर्ष।

म्हारे दिला री समझा सा बिना बोले
म्हारे तंयें जुणिए आपणे सुपणे छोड़े।
-बापू हुंदा सभी रे प्यारे,
घौर री नींव दुनिया न न्यारे।
-आमा दिना जन्म आसा वै,
पर जिणे रा तरीका दसदा तुसै आसावे।
-आसै सा थारे चिडू कोल्हा रै,
तुसै सा म्हारे राजे दिला रै।
-ठोकरा लागी आसावै जेभरै-जेभरै
थारा साथ मिला आसावै तेभरै-तेभरै।
-आसै हेरदा सुपणै सुतिए राती,
तुसै केरदा म्हारे सुपणे पूरे रात-ध्याड़
जागी।

-तुसा घाटी सा सूना संसार म्हारा,
जेभरै भी म्हारी आसा चूटी तेभरै मिला
तुसैरा सहारा।
-तुसा घाटी सा म्हारी सारी खुशी अधूरी
थारे बिना नी हुंदी म्हारी दुनिया पूरी।
-म्हारे दिला रा सभी न प्यारा,
सभी न न्यारा बापू म्हारा।

शिवानी, बी कॉम, अंतिम वर्ष।

बुजुर्ग री सीख

आसा रे बुजुर्ग हुंदे बड़े ही काबिल
तिन्हा जो हुंदा तर्जूबा जिन्दड़ी दा
सेही तर्जूबा तिन्हा आगे जो सिखाणा
आसा कन्ने आपणी आपबीती सुणाणा।
बुजुर्ग हुंदे खजाना संघर्ष रा
जीवणा रे जजबे रा सौगी बाता रे पाथरू रा
सारी जिन्दड़ी आपणी गरीबी च बिताई
छहलिया कन्ने छाह पीयी कन्ने भूख आपणी
मिटाई।
खेता रा काम कमाई कन्ने, धान कोदरा बाई
कन्ने खिंद, खंदोलुआ च सोई कन्ने मीठी
नींद आणदी
रिश्ते नाते निभाउदें थे चावा कन्ने
नाटा रा फेरा पांदे पूरे गांवा कन्ने
बुजुर्गा री सीख बड़ा कुछ सिखांदी
कदी आसा जो नी भटकांदी।
बुजुर्गो री सीख आसा सभी जिन्दगिया च
याद रखणी
आपु भी निभाणी कन्ने सौगी आपणी आणे
आली पीढी जो भी सिखाणी।

साक्षी शर्मा, बीए, प्रथम वर्ष।



Teaching Staff



Non-Teaching Staff



आइए! साथ मिलकर आज प्रकृति का संरक्षण करें। आवश्यकता से अधिक प्राकृतिक दोहन से बचें।
- महात्मा गांधी



Rahul, BA II year